

विषय ।	पृष्ठा ।
प्रसवके बाद रक्तस्राव	२८१ २८२
कुल पडनेमें विनम्य	२८२ २८३
प्रसवके अन्तर्ग वा प्रसवकालमें आयेय	२८३ २८४
प्रसवान्तिक छदस्राव (भोजिया)	२८४ २८५
प्रसवके अन्तर्ग पैयाव बन्द	२८५ २८६
प्रसवके बाद स्तन्यधर	२८७-२८८
अतिरिक्त स्तन्यधरण वा दूध ज्यादा जाना	२८८ २८९
प्रसवक बाद नया पैटा कुषा मियुका पानन	२८९
मियु भूमिष्ठ जाकर न रोना	२८९
मियुका नाभिच्छदन पानन प्रथम } मन मूत्र त्याग मियुका बाहार } नन् । और प्रसोपावा ।	२९० २९१
श्रीका रोग	२९४ २९६
बधिरता	२९६ २९७
बमन रोग	२९८ ३००
वमन (चेचक) रोग	२९८ ३०४
बागी वा बाघी	३०५ ३०६
वात (तरुण)	३०६ ३ ७
वात (पुरातन)	३०७-३ ८
वात (जमरका)	३१० ३११
प्रण और स्फोटक	३११ ३१४

खान और व्यायाम ।

व्याधि पाराम करनेके बाद जितने दिन पर्यन्त आराम देखा (पुष्टन) न हो उतने दिन पर्यन्त छोटे मरम करनेके कुछ समय मित्तके खान करना देखा होता है । खान करनेके पहले कुछ तेज मरम करना उचित । मैलेरिया खरमें हम सीधे खानके परवर्तते नहीं ।

मरमर हाथानि (मायरोन) कुम्भिरोगमें आराम का साधनका प्रयोग देखा नहीं । पर बीह रोगा बहुमुख मरम प्रचलित पुष्पतन रोगादिमें मात खान और मायशाकमें सावधानी देवन करनेके साधन प्रमद करना प्रभाव नहीं । मरोगमें जितने पर्यन्त कमजोरी करारत न हो उतना पर्यन्त खरमें कुछ मित्त नहीं होता ।

खरक और खल ।

खरक (मात) जनपान करना देखा यह बात पर ही यह मरममें कहते हैं । किन्तु सीधे-सीधे देखा हममें मरममें मरम और ठंडा खल देना चाहिये । जहाँ ठंडा खल देनेके रोगोंके मरोगमें मरम कमली को का खरि खरि मरि बहा पर मरम खल देना चाहिये । मरम मरम करनेके बहुत मरम मरमों को मरती है ।

पाकागोयक' कुनजन म जल पेटर्म नदी दुहो तम वरफ
का टुकडा व' जलेक मग नम चाडिने । रक्त चाडि
घोर प्रताप म' करनक वाला वरफका शिगप पयोग
जाना चाडिने । मस्तिक रग नमक प्रतापर्म वा
गिर प्रभति प' नाम वरफक वरफक नम म' भराके दिव
पर रजना चाडिने । उदु व' नम र' र' का वरफ नम
निग्रध सै ।

निष्ठा ।

निष्ठा = ना यस्मिन् सख्यं तस्यैव = सख्यता के किन्तु
 सख्यो त्याग के न किन्तु सख्यता नही
 है जगात् सौख्य का नही उचित नही नही सो
 हत्या वा रामको निष्ठा समझ लेना नही है ।

दोगाँवो रहम का घर ।

रागोका घर एवं परिष्कार । नाफ । और विमल
सदृशता होना चाहिये जिस घरमें तावडा भी हवा
चलावल जाता रहे ऐसा घर प्रयोजनीय होता है ।

पञ्च धुरम कितनेज रोमौयाको रक्खना छपित मही ।
 धोर रागौके मरोरम हवा का येग न मगमे पावे ।
 अयश वायु चममेश हार मन्द कर देवे धो हवाके
 मन्द होमेश हार पौन दमा चाहिये ।

संज्ञामक पौडामें क्या क्या करना चाहिये ।

मज्जायक रोगों का बल बसा देना चाहिये । दुर्गन्ध निशारसके निये चुने का पाउडर भी बुरा नहीं । घेनेस, कार्तिक एमिड व्यवहार का मज्जा दाह का धूमकरना होमियोप्याथिक औषध व्यवहारमें निषिद्ध घरमें चागुन का कोयला रखनेसे विशेष उपकार होता है । रोग चाराम होनेसे घरके धाक करनेके वास्ते मज्जाकादि दाह करा जाता है । धूनेका धूआ भी खराब नहीं है ।

हृत्ता वयन आदि रोगोंमें जो जो प्रतिषेधक उपाय लिखे गये हैं उन सबके उपर विशेष दृष्टि रखना चाहिये ।

रोगोंके घरमें रोगीकी सेवा करनेवालीके विवाह विशेष बादमो रहना पड़ता नहीं । सेवा करनेवाला किसी खाद्यद्रव्य का दान भगानेसे पहले चुना जगाके दान लेना चाहिये ।

रोगोंका लक्षण की परीक्षा ।

रोग निश्चय करनेके समय मनमें आश्चयन होने भौचे ऐसे उपसर्गों पर विशेष ध्यान रखना चाहिये ।

तरुण पदवा मयल पात रोगमें १०५ डिग्री होनेसे बड़ा ही कुनघण है । ग्रहीरका उत्ताप ८१ होनेसे बचनेका चाना नहीं रहता ।

नाड़ी परीचा ।

दुहयका दृष्टिष पो ओ जातिके पायें हायके कसि क ऊपर (मविषम्भने) बार बार तीन चहुमी रखके नाड़ीके छड़फनेका मातुस करना चाहिये । मसेमें वा छड़टेयमें भी नाड़ी परीचा हो जाती है नाड़ी परीचा (नेचने) क वधन रोगको छड़ देना चाहिये कि बिधी तरफ ध्यान न देना चर्दात् चल्न मन रहना चाहिये ।

चरम्याके अनुमार नाड़ीको गतिका वेग तेज वा मन्द होता है ।

चरम्या ।

प्रति मिनिटमें जितनीबार ।

बालकावली १ वर्ष चरम्या	१२ भ १४०
१ वर्ष चरम्या	११० मि १२०
६ " "	८० भ १००
१० " "	८० भ ८०
१० " "	८२ भ ८२
हजारव्या	६१ भ ८०

श्वामत्त्रिदा ।

त्रिदोष चरम्यामें चरम्याके अनुमार श्वामत्त्रिदा तेज वा मन्द होजाने है ।

मातृस्य च न भृशं त्रासमभ्युत्पन्नं रागाकांक्षानियय
कुलजगत्समस्तैर्जनैश्च हृद्यं नदा यत्र भृशं हारहा
नं प्रजापतिस्तत्र तस्य पदस्य रश्मिः सर्वत्र भावधानीत
इत्येताः ॥

4

[illegible]

एतत्तु रागसंभूतं कलङ्कं वनं मह्यं हो जाये ।
 एतावत्तु लालं कामसंभूतं चन्द्रमिच्छितं कलङ्कं मन्त्राय ।
 मूढका कान्दा वनं वा लालं वनं कामसंभूतं कुलक्षयं
 समभ्यस्तं नास्ति ।

सूत माट लवणस उमरुं चक्रुषां पुय मिथित
ममभना चाहिये । छोटे छोटे बालकोंका सूत दूध वा
बूनेके पलकें मट्टय होनेसे घटमें गरम या छमि रोग
ममभना चाहिये ।

ਘੋੜ ਘੋੜ ਘੋੜਨੇ ॥ ਮੂਕ ਸਾਧੁਰੋਗਰ ਪਾਨ੍ਹ ਵਧ,

वातज्वरमें अथ मधुमेघ पान्दुरीय ज्वरमें नीहित वषट्
दा जाता है ।

मन ।

साधारणतः निरोग शरीरवाले मनुष्यके मन का वषट्
हरिदा वच होता होता है । पीका जो खादेके समान
वर्ण होनेसे पित्तकामाग वम हो जाता है । खासो
हुण्ड पीनेवाले बहुतोके ऐसा दस्त होता है । ज्यादा
(धूर) इनटिया वर्णका मन होनेसे पित्तका माग
अधिक समझना । मन का वर्ण गांध एतेके माण्डि
हरा होनेसे अथ दीप समझना चाहिये । चाल्डियोकी
शिया ठीक न होनेसे मल सूके कठिन हो जाता है ।
चाल्डियोकी उत्तेजनासे जलकी माण्डि मंद न्यारा
न्यारा हो जाता है और मलमें वादा पित्त रहनेसे यस्त
की पेका समझना चाहिये ।

दरद ।

शरीरके दशानेसे प्रदाहिक पीडाकी हृदि होय और
पासेर (चाट लगी हुई) पोड़ा वम होजाती है ।
दरदमें किसी किसी वगड हठात् पोडा होके गौत्र
नाम हो जावे उससे घादुगूल समझना चाहिये । ठंठे,
अथ काय अत्रोच आदि कारणोसे दण्ड्यजने पीडा
(दरद) होजाती है । वात रोगशलेउ अधियोनि

दरद होय । हाथ पर या पाठम दरदके साथ ज्वर हानस समझा जायता है । टलिये हाथ थपथप दलिये स्तधम दरद हानस यज्ञतको पाण समझनी चाहिये ।

पदचि ।

परिपाकको विज्ञतता ज्वर दलनता भी प्रदा दिहरीमोम पदचि उत्पन्न हातो है । साथ मव प्रकारक कठिम रागम पदचि लखो जातो है किन्तु गर्भवस्थाकी ना पदचि हातो है उसका नहीं समझनी चाहिये । थप काम बहुमूत्र या यज्ञोथ रोगम खानेको प्रहनि पक्षाभाविक भावने का उद्दि पाद जातो है ।

दृष्टा : प्यास ।

अनेक ज्वरक साथ या यज्ञोथ रागम दृष्टाकी उद्दि पाद जातो है । बहुमूत्र रागम यह एक विधिय लक्षण है । जलानद (जलको बदलना नाम याने) रोगमें प्यास हातम जल पानम विशेष रोग उत्पन्न होय । फलत बहुत तिम या बार बार तिममें शारीरिक जलके संगकी क्षमता भी रागके उद्दिता लक्षण समझनी चाहिये ।

शिरको पौडा या माथका दरद ।

निरन्तर माथेमें दरद होनेम पपाक सायु रोग प्रवृत्ति दुहनता समझनी चाहिये । दुधनता ज्वर भी प्रपाह रोगम शिरमें तोत्र दरद पदा हो जातो है ।

भीवनका अपाक होनेसे गिरमें कम दरद भी शरीरमें बमि बमि होय ऐसा भातुम होय । म्यालेरिया दोषमें नियमित समयमें लनाटके एक घाघमें दरद जाता है । छमि या जरायू रोगमें भी गिरमें दरद हा जाता है ।

वमन (उलटी) ।

महसा (गिरंतर) किमीके वमन हुआ तब पाका घव भी पातड़ियोंको बिलति बिना परिमायका भोजन, मसपान प्रभृति कारवसे वमन हुआ है वा और किछो प्रकारमें हुआ यह अनुसन्धान पइसे कर लेना चाहिये । खर होनेमें किमी प्रकारका कण्टु वा गुमठा कुनो निकसे उछकी भी पइसे देख लेना चाहिये । हैजा वा पथरो रोगमें भी वमन होता है ।

नाना प्रकारको विपाक बीजधके खानेसे भी बमि होजाती है । खीके गभावस्थामें भी वमन होता है । रक्तवमन राग होनेसे रक्तवणका वमन होइ । घन रोच रोगमें मज्ज वा बिठाका वमन होता है । पित्त वमन होनेसे समका स्वाद पथ (खटा) को तिल (तोषा) होता है । पत्रीच रोगमें भी पथस्वाद विगिट वमन होता है । छमि रोगमें फेन फेन (भाग) कुछ वमन होय और वमनको रण्ठा हरदम बनी रहे ।

चिकित्सा विषयक ज्ञान ।

अमारमें रहके सुखमें जीवन यात्रा निवाह करना चाहे सब किमीन किसी प्रकारका ज्ञान रखनेकी चाह रखता विषयमें किसी प्रकारका ज्ञान रखना उचित विधेयत चिकित्सा विषयक ज्ञान होनेमें अपना अपने परिवार वगैरा तथा आत्मीय सज्जन और देशके उपकार करनेकी सामर्थ्य हो जाती है । इसलिये हमने सघेयतासे यहाँ पर अनेक विषयोंकी व्यवस्थाकी है ।

चिकित्सामें अधैर्य ।

देम घर बाड़ीमें किसी आत्मीय वगैरे कठिन पीड़ा उपस्थित हानमें भय रखना उचित । चिकित्सा विषयमें अधार जानिसे ही बड़ा धराध फल उत्पन्न होनाता है । नर्सान पीड़ा को पुरानी पीड़ाको उमझ दुभङ्गके इस विषयमें धैर्य धारण करना ही कर्तव्य । और सहाज ही न चिकित्सा, औषध वा चिकित्सक (वैद्य) की परिचक्षण करना बहुतही मन्द (धराध) है चिकित्सा विषयका विचार को औषधज्ञा विमान करके भना मुरा भगवानके ऊपर निर्भर करना ही अच्छा होता है । कितनेक वैद्य वा औषधको, एक साथ प्रयत्न करना अच्छा नहीं । इससे वैद्य रुकटम

रहनेसे उसी दौषध विधित् (बोझ) रोगकी दशाने मात्र हो है । जैसे—किसी स्त्रिये स्त्रावना कुहनादन प्रयोगमें एक बार कुछ पाराम होके कुछ समयके बाद पेटमें भूष दरद बन्द माया दुखना आदि होजाता है । वेमे जो पदारागमें वा पथ (यशमीर) रोगके रक्तप्रावमें किसी प्रकारकी मसमके लगानेमें एक बार बन्द करनेसे गानाप्रकार रोग प्राप्त होजाति है । जिससे वा जपदी पागम—जैसे होमिदोप्रापिक चिकित्सा है वेसी घोर चिकित्साघोने दुःख । तब ठीक दौषध निवाचन करके उसी रूप पाराम करना बडी ही बुद्धिमानी घोर धैर्यताका प्रदर्शन होता है ।

द्रव्यगुण ।

द्रव्य गुण ।

यह सब ची मित्राष्टिमणजे वास्ते एव विषयमें विशेष सहाय होना जानक नीचे जितनेक आवश्यकीय द्रव्योका गुण भव्यतास नविवेशित (बर्न) दिया है ।

ईशु (इशु) ।

यौतल कफजनक गुण । क पुष्टिकर ची मूत्र कारक । जहा कफ का नाश वा यत्नितता है वहा पर इशु दना निषेध ।

यङ्गुर ।

यौतल वृत्तिकारक यक्त बहक, मम मूत्र कारक एत्यादि । यतिमार रोगीको दना निषेध । यक्त ची पुगानो पौडाम हितकारक है ।

याम (याम) ।

जहा याम यौतल ची कषाय, यम पित्त बहक । डावा याम मज्जरोषक ची रक्त पित्त प्रकोपकारी ।

एडा धाम—गुरुपाक मम भिन्न दुष्टिप्रद । ऐसे
करके रहित धाम पुराने दहत को घोटाने यदि घर
को बच न दोतो दिया जाता है ।

धामसद (धामपापडा) ।

हकिर धम गुरुपाक रचक को वायु पित्त
मायक । पुराने धम को घोटाने छपेलागे है ।

धमनानीयू (नारगी) ।

गुरुपाक धमनानीयू रचिहारक । कभी वा घरे
दुष्ट नारगी दितहारक नहीं है । नारगी कथ का
दोष रहनेसे निम्न । धीरे लागी, माघ पागुनमें भी
दिया जाता है ।

कागधीनीयू ।

धमनानीयू मधुपाक धामनानीयू, धमि
हारक मूत्रहारक । धम दहत धादिने दितहारक
है । धमिहार रोगी माउके गुरु ना मऊकोडे भेटके
मम देते विमेष रदिप्र होता है ।

दिगुर ।

मीनक गुणधर, रच निर दाम मरति रोगने
दितहारक । दिगुरने रचना धाम मरणा चाहिये ।

खर्ई (चीन) ।

इस, मज्जापक चम्बिउडक चतिमार ज्वर, खासी आदि रोगोंमें दानाति है । परन्तु कामो खोल देना निषेध । खोलकर मग्न चतिमार रोगमें पक्का खोलमें जो लाँचण या पड़ोमकि (करडि) है उसकी निकाल देनी चाहिये ।

गुनर ।

इचिकर गानन गुदपाक पुष्टिकारक रक्तपित्त घन चर्मा समन पर काम गानन निवहारक । उपर का टिनवा १ १/२ १/२ १/२ । चतिमार दीप रहनेमें हम न १ यगहार नमा करत है ।

गाटुग्ध (गायका दूध)

मधुर द्रव्य इचिकारक, वन कान्तिवदक, हृद रोग भी नानाप्रकारका दधि दाय मागक । खासी दुग्ध निषेध । मूत्र दीहन करे घेले ५।६ घण्टा उत्तोल होनेसे यह दुग्ध रोगीको देना निषेध । चति मन्तपचता करनेके सिधे दुग्ध की निगेष रखा करनी चाहिये ॥

जाम (जामुन फल) ।

जामुन पत्रके इपत् (थोडा) लुण्ठवण होनेसे यह इपत् पत्र कषाय, रुच, समगोषक । भक्षणी रोगमें

देना निषेध । कबकी यह शिथिल है कि लामन यह ब्रह्मकारक है किन्तु उसके लामन और चर्मीयता होजाति है । लामन का धरम बहुत अच्छा पानु उपरका योग यह करे जिना पाना चरम निषिद ।

गुग्गाय चासुन ।

गुग्गायक मातन बहिर । पुराने यज्ञत रोगमें यह घटा हुआ गुग्गाय चासुन उपचार करता है ।

दाहिम (अनार) ।

मधुर, वा बेदाग लघु तिग्म ब्रह्मकारक, यह मुपकी माफ करता है, वा बिना नायक है । दति कार रोगमें दित है । अथ (एनी) गुग्गायक दाहिम कफ दोषवाने रोगको निषेध है तामि उपर वा बहिर भी दद्यादीय नायक है ।

पटोल (परवा) ।

सुगुपाक अमिश्रक रसक बहिर, स्वर प्रभृति रोगमें दितकर है । परवलका घत्ता वा नास पित्त नायक । परवल की बिन वा बड़ (मून) तीव्र निरेवक ।

पानीफन (कक्षा सिघाडा) ।

मीतल गुग्गायक, मलकटोषक, कफलनक इसके पालेका (घून) गुग्गायक पाक है ।

विद्यु (ईश्वर) ।

मित्र इन्द्र, धातु का पितृ दाय नट धातु ।
दुर्गात्मा एव च। दक्षिण धाम्ने विमलारक्त दया
जगता है ।

मोक्ष प्रदता प्रदीपनीय विमलरक्त दाय'की तान्त्रिका
द्वारा का नट है। इन की की का दर्शन वा ज्ञान, महा
व्यवहार जगता है। ईश्वर'की इन का उदाहरण विद्या
महा है। दातृक वा व्यवस्थापक दाय'की दायक दीयता
होकर दीयत भक्त नर्तक ।

सर्वदा प्रयोजनीय औषध समूहकी

तालिका ।

औषध	क्रम	औषध	क्रम
धाम मिट्टासिक्ताम	१	दीपककृष्ण	१
धाम'मिह	१ १०	दीपकटाट	१
धाविद्या	१	दीपकनारैट	१
धाविदिन		दीपककृष्ण	१ x १०
दीपिकाक	१ १०	दीपिक	१
दीपिर्माया	१	दीपिदम	१ १०
दीपुता	१	दीपामासिता	१२
दीपोगारैट	१ x १	दीपसिक्ताम	१

खानिबार्डकमिकाम २ । चट्टी मन्थिनी
पीडा, देटकी पीडाके साथ पञ्चायमीनता पारप
करनेसे ।

लिहाम २ । मन्थियोंकी मजल म्थोति पो
खानेकी मन्थियोंमें समन मदिरापानके पीछे पीडा
रह्यादि ।

लाङ्को पोडियम १ २ । पञ्चरो कीउहता
पहलकी पीडा रात्रिमें दरद की हडि डरार (डकार) में ।

संक्षिप्त चिलित्सा वा सङ्केत ।

तरुण पीडा,—एकीन, बायो चहस । इमज
साथ पाकायय का गोनयोगदानेसे—एष्टि—कूड ।

पुरातन पीडा,—नैडाम, सनयर, खान
केरीया । दरद जानेसे—पाचिका नञ्ज पन्स ।

इसी पीडाके साथ पशावका क्रेश,—
प्राथारिष, पाथारिष ।

मतवालोंकी पीडा में,—खावरे, मञ्ज
भमिशा पन्स ।

औषध व्यवस्था ।

नक्षत्रभूमिका ६ । उत्तेजक द्रव्य सेवन गुह्य भोग्य भीषण भीषणपाकजो धानुमन्त्रिक पोडा । रात्रिके मध्यम दरद भी यम्यना बटती है ।

आयोनिता ६ । पोडाके द्वारा वक्षस्वस्तदेम (हृदयके उपर) पाक्रान्त जानस पैलिक नचण मिर माया या कांधमे पीडा मानुम हाके पीडा को हृदि होय ।

रसटक्स ६ । पीडा का स्थान कडा गति होन भी दुष्कलता स्थिर रहनेमे पीडाको हृदि हातो है ।

सलफर १० । पुरानो भी पुराय परम्पराको बात मरीरमें चुनकना भीर पोडा एकवार ही नाथ होके फिर होजाती है ।

क्याल्केरीया १० । धातुगत पीडा मजमें पीडा रहनेमे कामक करनेसे पीडा अधिधोम छट छट मन्द जाना और पाय चन्द्राक्त (पसीनसे) ठण्डा हो जाये ।

कालचिक्रम ६ । अनेक सन्धि पाक्रान्त होके दरद नाथ होके फिर हृदि पेमाव कम ज्यादा मोटे

आनिवाइकमिच्छाम ॥ धर्मो धर्मो
पौडा, दैवी देवाइ साथ पञ्चादये, नता धर्म
हरनेये ।

लिहाम ॥ धर्मोकी धर्म कोति धी
धर्मोकी धर्मो । धर्म मदिवादनके धर्म धर्म
रत्ना ।

लाइको मोडियम १ २ । धर्मो कावयता
धर्मोकी धर्मो रत्न धर्मो धर्मो (धर्म) म ।

संचित चिलित्ता वा सङ्केत ।

तन्मय पौडा, — धर्मो, धर्मो धर्मो । धर्म
धर्म धर्मोका धर्मो धर्मो धर्मो — धर्म — धर्म ।

पुरातन पौडा, — धर्मो धर्मो धर्मो
धर्मो । धर्मो धर्मो — धर्मो धर्मो धर्मो ।

इसी पौडाके साथ धर्मोका धर्मो, —
धर्मो धर्मो धर्मो ।

मन्त्रधर्मोकी पौडा में, — धर्मो, धर्मो
धर्मो धर्मो ।

पुनर्तीय देना चाहिये । यह मज्जानेसे घरा हृत्त को गरम करके लगानेसे अन्दी घृष जाती है ।

घौषध-व्यवस्था ।

पन्सेटोला । इसमें घौष वा राव पडनेसे पडती हो लगानेसे जल्दी चाराम होजातो है ।

थाफिसेयिया । दोनों पापीके भाक्चमें होनेसे गुमानपीके छदर लगानेसे शीघ्र चाराम होय ।

याफाइटिस । बारबार मैदीकी भाक्चमें होनेसे ।

मल्फर ३० । बारबार होनेसे दूर करनेसे वाली एक सप्ताहमें दोबार व्यवहार करना ।

दियार मलफ ६ । तरब रोगमें बड़ा चक्षुज दरद होनेसे घृष (घौष) पडजानेसे दिया जाता है ।

मार्कुमल ६ । दरद कम हो जानेसे इस घौषधको व्यवहार करना चाहिये ।

सेशन विधि । तरब रोगमें प्रति दिनमें तीन बार पुराने रोगमें प्रातःकाल दो सायंकाल एक एक बार व्यवहार करना ।

पुनर्दीप्त देना चाहिये । यह जलजनेसे बरा हल की
राम करके जलनेसे बन्दी बंध जाती है ।

धौषध-व्यवस्था ।

एन्मेटोना । इसमें पीप का रास पहिलेसे
पहले ही जलनेसे बन्दी चाराम होजाती है ।

ट्राफिसेयिया । दोनों पाखंडे भागधमें
हीनेसे गुमानदीक ऊपर जलनेसे झीठ चाराम होय ।

याफाइटिस । बारबार मैतीकी भागधमें
हीनेसे ।

सम्फर ३० । बारबार हीनेसे दूर करनेके
बादले एक मत्ताधमें दोबार व्यवहार करना ।

हिपार सलफ ६ । तबब रोममें जहां चदन
दरद हीनेसे दूध (पीप) पडजातेसे दिया जाता है ।

मार्कुसल ६ । दरद कम हो जानेसे १०
पीपधकी व्यवहार करना चाहिये ।

सेवन विधि । तरब रासमें प्रति दिनमें तीन
बार पुराने रोममें साठकाठ की काठकाठ एक एक
बार व्यवहार करना ।

खाद्य पदार्थों को विनष्ट द्रव्यके अथ दहन क्रियाके निबन्धसे यह ताप उत्पन्न होता है। परिपाक क्रियामें देहका अथ पूर होय और उसका स्वाभाविक अन्तः को रक्षा हो जाती है। परिपाक क्रिया का अतिक्रम होनेसे जो पीडा उत्पन्न होय तिसको अर्षीय वा अर्षाक रोग कहते हैं। हमने नीचे इसके नामा प्रकारके अन्तः सन्निवेष्टित किये हैं, वह एक एक रोग बोलके वर्णित हुये हैं।

लक्षण । भूषको विकृति, पेटपर आकरा, वा

पेट पूर्ण मानुस वसन को रक्षा तिसा वा अर्षा वसन निद्रा का भाव न होना वा नीम पर काटेस पडे हो चाय आदका विकार बुद्धिमें (हृदय) वसन वा दरद भोजन पर रक्षा न होना भोजन करनेसे अत्यन्त क्रोध मानुस, होना, कभी कौठवहता, कभी अतिमार गिरने दरद जाना मन की शरीरमें विस्फोट भाव हृदय का फटकना इत्यादि।

भोजनके परिपाक की शक्तिके हेतुमें अल्पप्रमाण हृदय अथवा नामाविध यन्त्रोंके क्षाद्यमें आघात (घोट) उत्पन्न होय।

चतुर्था । कभी कभी भूषके न लगनेके बदले रक्तवर्ती विकृत भूष उत्पन्न होय। इसमें जो पृष्ठतकी

एकता है । पाकागणमें विद्यमाने सबकी दुग्ध
पदार्थों की मज्जा भोजन समुदायमें आये बिना या
अल्पान्वित हुए बिना हमके पक्षी तरह भोजन
परिपाक नहीं होता है ।

सङ्क्रान्ता खाड्योन एक एक पानकी १२ । १२
घण्टे रुक करके निश्चयना या । हम लोग दोन दोन
कामोंमें लगे हुआ समय भट कर देते हैं किन्तु परम
घरकी चाराखना (मज्जा पाण्डित्य स्थिति) की
भोजन करनेके समय इन्हीं स्थान रहते हैं । मांसम या
मुषमें दास भात रोटी देके पक्षिष वा स्तूयम आना !
इन्हीं हम आलोका परिपाम बडाही मोचनीय होता
जाना है । हमको अनेक समझ दुर्भक्त ही माना
कारणने कुछ भी करने नहीं गये यह एक बडाही दूर
है ।

कथोदयः । भोजन करने समय वीक्षण
उचित नह । । व्याप्य दोहनेमें हम नगरी भूषके
नितरकी दूधित प्रथम वायु वा काश्चिच्च दन्ति
पानके मायने मिश्रित होत्राति है ।

समय । भोजन का समय, जो परिमाण पहा
रखना चाहिये । प्रतिदिन नियमित समयमें भोजन
करनेका फल समी हुआ नहीं जाता । एकदिन
पानकान भोजन किया, अन्य दिन मध्याह्ने भोजन

सडे । शिन्नु धनीर्ष भी पख प्रभृति रोगनें पखे
मज्जका (कह मज्जोडा वाहा मागुर) भोन मज्जोडे
भाननें वधा देना वधू प्रभृति सामान्य तरकारी
देना चाहिये, ममासा विविधतासे चिरम्बु (राइ)
माज मिरच देना नियेध । एक वचन सागु वासीं ख
का मज्ज पाराहट भी दुग्ध को धवस्या करने उचित ।
दाह (तक्र) का निम्बु का रस थोडा थोडा बुरा नहीं ।
खज पानिसे समय बीसका मुरम्बा बनार, पट्टर
मिथी इत्यादि देना चाहिये । हतपक्व पदायमात्र
मांस, पिटक (कचूरी बडा) माजा दूध दूध, गोधूम,
माक दूध, गुड दधि, हत दाना घोर, प्रभृति
निषिद्ध है ।

पानीय (जल) । वा—कफि प्रभृति पान
करना निषिद्ध । मध जलमें भोजनके समय ठण्डा लट्टी
पखा, भोजनके समय दधिख जल पीना नियेध भोजन
के पीछे १२ घण्टा बाद जल पीना चाहिये । दिन
भरमें १२ ग्लास जल पीना पखा होता है । हमारे
देशमें ज्यादा गरम जल पीना निषेध है ।

मनको हृत्ति । प्रमुत्र पलाशरस भी प्रसव
मन होनेसे भोजन करना उचित । हमारे देशमें
भोजनके समय माता वा स्त्री वा घोर दाह पानिद
भजन हसीय बैठके भोजन कराते है । दाहय नोदोने

मडे । किन्तु पञ्जीर्य को चय प्रभृति रोगमें पण्ये
मध्यका (कर, मठरोजा वाहा मागुर) भोजन, मण्योके
भोजनमें कडा देना, कय प्रभृति सामान्य तरकारी
देना चाहिये, ममाण विगेषतामें भिरम्भु (राह)
मान भिरच देना निषेध । एक कयत सागु बार्मी अथ
का मण्ड पारारट को दुध को व्यवस्था करनी उचित ।
हाह (तक) का निम्बु का रम घोडा घोडा बुरा नहीं ।
जन धानेके समय बीमका मुरघा बनार, चहर
मियो इत्यादि देना चाहिये । हृतपन्न पदायमात्र
मास पिटन (कचूरी बडा) मात्रा दूध यव, गोधम,
गाह, इन्, गुड दधि, हृत दाना चोर, प्रभृति
निषिद्ध ह ।

पानौय (जल) । पा—काफि प्रभृति पान
करना निषिद्ध । सब नधमें भोजनके समय ठण्डा जलही
पण्ये भोजनके समय अधिक जल पीना निषेध भोजन
के पोरें - १३ घण्टा बाद जल पीना चाहिये । दिन
भरमें २।३ ग्लास जल पीना पण्ये होता है । हमारे
देशमें ज्यादा गरम जल पीना निषेध ह ।

मनको हृत्ति । प्रफुल्ल चत-करय भी प्रसन्न
मन होनेसे भोजन करना उचित । हमारे देशमें
भोजनके समय माता या स्त्री वा पीर काह पानिय
सत्रन समीप बैठके भोजन कराते है । साहय सोमोमें

भोजनके दोहे पाठ करना (पठना) निषेध । अधिष्ठ रात्रिमें चागरप करना विहित नहीं है । बीच बीचमें साह्य रक्षा करनेके स्थान का हवा परिवर्तन (चदनना) करना का दूर देय गन्धनका परामर्श करना चाहिये ।

जनशान लोगोंके यह चर्चार्थ रोग सङ्क्रम ही है जो जाता है क्योंकि जनशान सम्मानत पक्षे पक्षे पदार्थ भोजन करके दिनोंमें जिना सेनेमें पशोय रागके हाथमें खर्च मुक्त (कटने) नहीं हो सहा । हरिद लोग मयानक परिश्रम करके देहमें कुछ पश्चि तरह न पाके बाहरकी बीमाके शस्त्रे पीयाब प्रभृतिके छत्र निर्भर करनेसे साह्य (कुछ भी) पक्षः नहीं रहना ।

श्रीधध व्यवस्था ।

एष्टि क्रूह २ । एति भोजन का पाहस्यही पूर्ण होनेसे जो पीडा बलक सुोसेग ही हृदय की पीडा तिमके उपर सदा दुग्धकी माफिक सेय, दुग्ध लारा (बकार) कोठरणा और देहका रोग प्याय प्रम प्रभृय श्रीधधतमें पानके पीके पीकही हवि,

ट्रेयन पर बैठके मध्यामादि के साथ भोजन साथ रखवा होके करते हैं फलन कोषादिके समोभूत होके भोजन करनेमें पत्रोष हो जाता है ।

व्यायामादि (कमरत) । पूरा पूरा भोजन किये पीछे मानसिक वा शारीरिक परिश्रम करनेमें भोजन शोण नहीं होता इसभीमोक्षे देगमें पक्ष भी पत्रोष रागजा इतनि उत्पत्ति होगर है । तडातडि (जनदि) मुखमें भात रोटा न देनेमें स्तूभ भी पक्षिषमें न जानेमें काम नहीं चलता ।

फलन निष भिषे ५३ नियमों पर विगीप ध्यान रखना वा ५३ ।

प्रतिदिन प्रलय (मुख्यान्य समयमें) काममें गात्री-त्यान पृथक् कितनावार बाहरकी माफ़ वायु निवन करनेके वाफ़ धमन करना चाहिये । टई नभने ध्यान नियमित समय पर अच्छे अच्छे भोजनादि करके सोड़िवाव विनाम करना चाहिये । दिनमें मित्रा सेना वनित है । भोजनके बाद २५ घण्टा पीछे जल पान करना, माफ़ (रेखान) में फल मूल भोजन मध्याह्न सोड़े पड़ने पैदन खनना पानि नाना प्रकार व्यायाम पक्षा (कमरत) तिसके पीछे मध्या निख नेम पाडिष करके भोजन और भोजन दाय वा तान घण्टा पीछे मदन करना चाहिये ।

भोजनके छोटे पाठ करना (पटना) निषेध । अधिक राखिमें आगरण करना विहित नहीं है । बीच बीचमें स्वास्थ रखा करनेके स्नान वा हवा परिवर्तन (वदमना) करना वा दूर देश गमनका परामर्श करना चाहिये ।

घनवान लोगोंके यह घनीय रोग सदासे ही मिले जाता है क्योंकि घनवान क्रमागत अच्छे अच्छे पटाप भोजन करके दिनमें निद्रा लेतेसे घनीय रोगके ह्राससे कभी सुख (बुटने) नहीं हो सक्ता । दृष्टि भोग भयानक परिश्रम करके पेटमें कुछ अस्थि तरह न खाके बाहरकी भीमाके वास्ते योग्याय प्रभृतिके उपर निर्भर करनेसे स्वास्थ (सुख भोग) अच्छा नहीं रहता ।

औधध व्यवस्था ।

एष्टि क्रूड १ । अति भोजन वा पाकस्थत्री पूर्व होनेसे जो पीडा, वासक सुशोभन जो हृदय की पीडा, निभके उपर सदा दुग्धकी माफिक सेष दुग्ध उद्धार (उद्धार) कोठवदना और पेटका रोग पचाय कम प्रकाय, पीसकासमें घानके पीछे पीडाकी हृदि,

भोजनके थोड़े पाठ करना (पटना) नियेव । अधिक रात्रिमें जागरण करना विहित नहीं है । बीच बीचमें स्वास्थ्य रचा करनेके स्नान वा हवा परिवर्तन (बदलना) करना वा दूर देश गमनका परामर्श करना चाहिये ।

घनवान लीनीके यह चजोच रोग सहजसे ही से हो जाता है क्योंकि घनवान क्रमागत अच्छे अच्छे पदार्थ भोजन करके दिनमें निद्रा नीनेसे चजोच रोगके हाथसे कभी मुक्त (छुटने) नहीं हो सक्ता । दृष्टि रोग भयानक परिणाम करके पेटमें कुछ अच्छे तरह न खाके बाहरकी धोभाके वामने पोशाक प्रशुतिके उपर निर्भर करनेसे स्वास्थ्य (सुख भोज) अच्छा नहीं रहता ।

श्रौधध व्यवस्था ।

एष्टि कूट ६ । यदि भोजन वा पाकस्थली पूर्ण होनेसे नो पीडा, वास्तव श्लेष्मोग भी बृहस्प की पीडा, जिभके उपर सदा दुग्धकी माजिक सेप, दुग्ध उदार, (उकार) कोष्ठवशता और पेटका रोग पथ्याय क्रम प्रकाश, शीथकाष्ठमें छानके पीले पीडाकी हृदि

[illegible]

पायः ८ । दुयत्त दरनाउ रान वा म १
 दिया दु- काने राग हरन ५ अरिपाक दो पट ५
 वादे दान म-कुम ११५५ दान- वदम ८१६ व ५
 चीन वरामद भीजन मिला दु- दान- मिला परिपा ८
 मण्डे माय निजाना पट दु- म- म- दान-
 पादा वरमम-ग दो मादक दान पा-पा- पा-पा-
 दानादिन दिया कला ५ ।

व्यालियाई ह्मिहाम् ६ । वाह्म माह
पद्याह ह्मह पेट दह मदिह पौनेह पेट विहार
माह भोजनमे पदपि लीहह उवर ह्मदिही माह
सेप तिह वा पही उकार भोजन कारमे वा ह्मह
पदपिहित पेटे भोजन होव सेम परिप्राहके व्यापन
हेतु भोजन उद्या दवा पद्याह पेटमे पडा है ।

लाइको पडियम १२ या २० या १ इवम

मनुष्यगण को पीडा मोठा पदाय वा शाक शमि भोजन ॥ पेट फुना अपरिपाक नियत निद्रासुता, पदरा शरीरक यान्ति (हरारत) वानरहे, अपराड ॥ इनेसे ८ वजे पथ्यन्त ममस्त मवण उद्विपात होय, वहा वमन कोटवपता घोडेसे हो पादारसे पेट पूण मासुम होय यकृतकी हृदि करनेवालो पेट को पुरानी पीडा, धायावक दुर्बलतामें ।

नक्षत्रभमिका ६ वा ३० था । जोभका पदता भाग साफ हो पयाडाग मेमापनयुक्त, भोजनके पीछे पेट पर पाफरा वेदना हो पूणता मासुम छातिमें जलन छो डकार दिका, उदराभान बरवार भोजन किये हुये पदायका पित्त वमन मुखमें खरा वा तीखा स्वाद, भोजनके पीछे निद्रासुता किसी प्रकारके शरीरक वा मानमिष परिश्रमसे कातरता, मल मूत्र त्याग का निष्कन विग जो अधिक पढ़नेसे वा अधिक खानेसे या घुरा (मदिरा) पान करके बैठनेसे वा घरमें रहनेसे, चमकी पीडाम दुग्ध रोटो वा खरा सद्य नहीं होय इसके पीछे तनकर अवयोगी होता है ।

पन्सेटिला ६ । धीरे धीरे पीडा प्रताप, अनेक दिनके भोजन किये हुये वा वमन वा रुउमें पाश्वाद मासुम, छातिमें जलन, हो मल

जान पाया वा दण्डविन पाशाट त्रिहाडे उपर बुन्देद
मेघ, सोभने वा दण्ड दण्ड रात्रिमें बार बार कण्ड
पो चामसय मे । , तेनाह वा हुनपल वा मिद
बुद्ध भोजनसे पोहा लदव होय, भोजनसे पोहे
जमने हुननेमें चामसयता दरदसे कसरवा चण्डा
होना कर दिदा जाय दुग्ध मांस वा रोटीका चादि
में चण्ड नहीं होना, छाडडा चमार, बालक पो
बिटीको पोहा त्रिपुको गरम चदेवासे ठहा पाया
को चण्डो पोहामे ।

सुलफर ३० ग्रा । पुरातन पीडा दुसरी
बोधमे उपचार न होनेसे स्कोटस, चर्म बोधवता
चण्ड रोगो दुग्ध रोटी पो मिह दण्ड चण्ड न होव चत
मे दाहकने दर भार मानूम होना चासी पेटका
चामेदन मानूम होव माया गरम हाव देरीमे कसन
मतशाने चामिपिदि चणीय रोग समन पेटको
बेदना बिमी एकमसे बडेद बेठ जानेसे पेटको पीहामे
दिया जाता है ।

दुंगरी उद्गारमें,—एन्सु सुन्धर, विपिदा ।

सडा उद्गारमें,—चारभेजि ।

सुवधाक्त खादमें,—विपिदा ।

एन्सुक्त खादमें,—चाहें ज़ायो, चारभेजि,

हारहोय नख, एन्सु सुन्धर ।

हृदयकी खननमें,—ज्यासडे, चारभेजि

हारहोय नख सुन्धर इत्यादि ।

वमनेष्टामें,—एन्टि टाट चाहें इपिदा नख

खावेष्टाम इत्यादि ।

सुखमें चल पहनेमें,—ज़ायो नख चल

घर ।

भूष दन्धमें —चावना चलस एन्टिबूड

इत्यादि ।

धर्म (Piles)

सञ्ज्ञा । मलद्वारके मोतर की बाहिर धिरा म्हीत (फुलना) है उस लठिन चाडे होटो होटीवधि चरच होता है । धर्मुद वा बरिद'को देखनेसे रहस्यं वा हृष्याम रहस्यं और चरका पाजार मटर वा चरद

यह छोड़ा होनी है । गमावला भी यहाँ की पीड़ा होनेसे रसको उत्पत्ति होनी देखो जाती है ।

चिकित्सादि सहकारी उपाय । वा

कादि अधिक मसाना छद्मद्वार स्नाय करना चाहिये । पिष्टक (बड़ा, कचोरी) मास मास (उड़द) छुआगुद भाजन नियेध है पुराना चावल धन मुष्टको दाह, परवस (पटोस) गुनरिया, मानकधु चीम लक्ष्मी मूर्ती कथो चरण का कडो प्रभृति उपकार । हुय मास्रन हतपक्ष हय किममिम पद्मूर छत्रूर पक्षो चरणकाकडो मृदा (काह) सुन्दर पय है । ठंडा जल परिमाप पूवक जल पान हर रोज शयन करनेके पहले मस्र न्याग (टही चाके) शयन करने का पम्पास करना अच्छा होता है ।

श्रौषध व्यवस्था ।

एसोनाइट ६ । रक्तवायुके साथ वनिका कड़ापन गुच्छदारमे गूल पेधउत् दरद पाष, भूषका वस्य होना निगका व होना ।

इस्कुलम ३ । जैसे गुच्छदारके भीतर एक पीप वा पेक फूट गया है इस प्रकार मातुम होना । मिथेदरके बीचमे दप् दप करना कसरका वेडापनमे ।

घाटनेके माषिक मीटुम मदिरा वा पीनेके पश्चात्
प्रसूति उत्पद्यते अथवा अरुण वादिपे ।

सलफर ३० ग्र वा । मधुमक्षिका पुराणा
वशात्, अभी पीडा नहीं रहती अर्थात् शोचित
वन्ध होनेसे घटने दरद इत्यमर प्रसूति माना रोग
उत्पन्न होता मधुमक्षिका सामने जो यह शोच
जात-मान होय शोचने अथवा करनेसे उपचार हृदि
होती है ।

साङ्गुलिगिया १२ वा ३० ग्र वा । यमें
ज्वर वेदना गुदहार वा अन्तर्होदमें पीडा गुदहार
की जाती जो बदस्तूरता रोग प्रसूति उत्पद्यते विमेष
उपयोगी होय ।

संक्षिप्त चिकित्सा ।

अर्गशो शोचित वन्ध होके विविध पीडा

में,—मक्ष सलफर इत्यादि ।

अर्गशो वेदनाने,—वेनाड, साङ्गुलिगिया ।

घट (घार) में,—ज्वर, विमेषिण पल्लव ।

घसन—अर्ध रह्य ।

घाटनेके सर्गिक मीनम मदिता या पीनेके चम्पस
प्रति प्रदोने व्यवहार करना चाहिये ।

मनुस्मृत ३० श वा । मरुमसिद्धा पुराना
व्यामोर कभी पीडा नहीं रहती चर्मका मोदित
वस्त्र होनेसे दिनें दरु इन्धन प्रयति माना रोग
नष्ट होना मरुमसिद्धा घातमें जो दह पीव
घात-घात होय मोदमें व्यवहार करनेसे उपचार हवि
होती है ।

मादुल्लिखिता १२ वा ३० श वा । यद्यपि
प्रव वेदना दुःखार वा चक्षुषोदमें पीडा दुःखार
हो नसी जो चक्षुषोद रोग प्रयति चक्षुषमें विमेष
करनेमें होय ।

संक्षिप्त चिकित्सा ।

चर्मका मोदित वस्त्र होखे विविध पीडा

मै,—जब कण्ठ रक्त ।

चर्मको वेदनामें,—देहाड कान्ठेगिया ।

घात (घाव) में,—एक, दिनेगिया चम्पस ।

घात—एक एक ।

गर्भाशयाम्—मातृकोष मण्ड ।

मतवालोकी पीडामें—नम्र आनेमिम ।

चटुनडाडा वा (चगलेडा) (हुडटनी) (Whitlow)

इसका प्रचलित नाम चटुली-वेटक । इसमें चटुलि
का अग्रभागमें प्रदाह (जनन) होके पुय (पीप) मस्यार
होता है । चटुलिमें दण्ड दण्डानि गरम रोगीकी
दिन को रातमें अशेष पीडा भोग करने पड़े । समय
समय पर समझ जाय वेदनायुक्त होजाता है । कभी
इसमें मीश पीप नहीं पड़ता अथवा अनेक जगहमें
चटुली से दूसरी चटुलीमें भी होजाता है ।

चिकित्सा । रोगकी अवस्था देखके गरम
कालमें चटुलीकी लुवायके रखना चाहिये अथवा
एक निम्बूके बीधन छेद करके उसमें चटुलीकी प्रवेष्ट
करके रखना चाहिये समय समय पर पुनः टिम देने
से पाराम हो जाता है । जब राख या (पीप) पड़ जाता
होती है तब चटुलीका पीप निष्कायके कालेन्दुना
सौमन से धोना चाहिये ।

५३१ अग्रस्था ।

मातृ गमना १ । वा ३ शरी । तथा
क गमना १ क उ ह लाना इसका अर्थ । सामान्य
जान १ मरन अग्रमाम्ब स नम पौडाकी वशि
नही शक्ति । य १ ह जानम चक्रक्रियाक पीछे देनसे
न १ वाउ धामाम च न ना १ ।

उन्नामनम १ वा ३ । प्रवस ज्वाला
रानम गह विष प्रवस जानम एचनगोल धाव मस्तिष्क
लक्षण रक्षणम १ १ य य १ पोषाता है ।

फ नृत्तिक गामड । १ १ गम्य याव अस्मि
पयत्न भाकम १ १ नम

विपार सनकर १ । पाप पडनिसे पडते
निया जाना है पाप पडजानक पोष व्याकेमिस वा
पडठ को पोषात ।

मार्कुगियाम । ६ प्रवस वेदना, पाप सचा
प्रवसि मधयाम य १ पापध दनसे शोध रोध नाग होत
है । इसक साथ प्रवस ज्वर होत एकोनाबूट
दना पारा नही ।

कारणसे अनुमारसे संधिम चिकित्सा ।

घोटने मगनेसे—रिडम ।

जुलै १९६१-६२

જાહેર જાણિતી મુદ્દો, ૪ પૃષ્ઠામાં - ૧ છે

FREE

अष्टादश श्लोकः—क दशैव कलदा ।

ਦੇਸ਼ ਦਰਮਿਕ ਧਰਮ - ਵਿਚਾਰ ੧੧ ਕਾ ੧੯੮੪

ਪੀਐਸ ਐਲਮੈਂਟ ਪੇਇੰਟ - ਆਰਟਿਸਟ ਗਲਾਸਰ ।

प्रतिपाद्यक विधिवत्ता—पद ५५ एवं ५६

ବିଦ୍ୟାବଳୀ କିମ୍ବା ନିଜର ଶିକ୍ଷା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦେଇ
ଆସୁଛନ୍ତି । ସମସ୍ତଙ୍କର ଏହି ଆଶା ଥାଏ ଯେ ବିଦ୍ୟାବଳୀ
କିମ୍ବା ନିଜର ଶିକ୍ଷା ଉପରେ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦେଇ

[illegible]

य हा दुसऱ्या क्रि. पूर्व ५००-४०० ई.पू. या काळात
दुसऱ्या काळात य हा दुसऱ्या क्रि. पूर्व ५००-४०० ई.पू. या काळात
दुसऱ्या काळात य हा दुसऱ्या क्रि. पूर्व ५००-४०० ई.पू. या काळात
दुसऱ्या काळात य हा दुसऱ्या क्रि. पूर्व ५००-४०० ई.पू. या काळात

पम्मेटिना ३० गुवा । पम्मेटिना वा
 पम्मेटिना वैदु रोदु इत्येव नद एतन्मय सो रात्रि
 वै सोमेन ।

एन्टिक्क ६ । एन्टिक्क मेन्दे वैदु
 डा । विदु नदु । एन्टिक्क मेन्दे वैदु
 विदु ।

टुडुक्कामोरा ६ । विदु वा टुडुक्कामोरा
 डा । एन्टिक्क वा एन्टिक्क मेन्दे वैदु
 टुडुक्कामोरा सो एन्टिक्क मेन्दे वैदु ।

रमटुक्क ६ । एन्टिक्क मेन्दे वैदु
 वैदु रोदु । एन्टिक्क मेन्दे वैदु
 एन्टिक्क मेन्दे वैदु ।

पाम्मेटिना—इत्येव ६ । पाम्मेटिना मेन्दे वैदु

६ वैदु । पाम्मेटिना मेन्दे वैदु
 ६ वैदु । पाम्मेटिना मेन्दे वैदु

॥

नाइट

॥

एन्टिक्क मेन्दे वैदु

॥

॥ वैदु मेन्दे वैदु

पञ्चमेष्टिना ३० नवी । अपरिणाह वा

रत्र हृष्टता हेतु रोम दाह्ये ण्यस्य सतिपाह्यो वातमि
हृदि होनेम ।

एष्टिक्रह ६ । पाशान्त्रिक ग्लेणयोग हेतु

दीडा । जिह्वा पादा रमक निर । अण्यस्य सतिपाह्यमि
हृदिम ।

टलकामारा ६ । हिम वा टंडा कर्मणि

पाडा दमोपता वा रत्र हृष्ट रोम दाह्येवातक माय
पेटने दारद यो परिपाह्यो की विजतिमि ।

रमटक्म ६ । दाह्ये ग्लेणमत्र पशुति भीजन

हेतु पीडा मधमावस्थाम रजनमि पीणको हृदि यो
वातपल होना जल मगाप्ये कण्डपन (सुत्रमो) ।
वा सहेद हृदिम ।

घाटिका—दुर्भरेम ६ । घनकोक मतमि यद

एव उत्तुष्ट भीषध । विमोदत भागवात रानेमि कदा
पेटका दारद वमन विरचन प्रथति उपसमं यद उप
स्थित होनिम ।

एकोनाइट ६ । एव, सस्त्रिता व्यास

रदादि विदमात्र होनेमि बीष दीधने बह देना
पाहिदे ।

पम्पेटिका ३ । गंगा । पम्पेटिका का

रक्त लच्छना हेतु रोग दाहक म ह दन्तिगार हो शत्रुमें
हृदि होलेम ।

पम्पेटिका ४ । दाहा-पित्त निजदाह हेतु

होता । शिवा पादा रसक निरा ह मरुत, दग्धुदयमें
हृदिमें ।

दुल्लक्षामारा ५ । निम वा ठंडा जामेके

दाह दग्धता का रक्तलक्ष्म रोग दाहशतक पाद
देहमें दाह हो परिणाक ४ विरहितमें ।

रमटकम ६ । दाहक ज्ञानक प्रभति भोजन

हेतु रोग दाहक शब्दात् रक्त रोग पीनका हृदि हो
रक्तलक्ष्म होना उम जामेमें लक्ष्म (शुद्धता) ।
वा रोग हृदिमें ।

पार्टिका—पुत्ररिम ६ । दाहक जामेमें दाह

पद रक्तलक्ष्म होना । विद्येता दाहक जामेमें दाह
पेटका दाह रक्त विरधन प्रभति उपरम उम उम
हृदि होना ।

पक्षीनाइट ६ । दाह दग्धता दाह

रक्त विद्येता रोग रोग रोग रोग रोग
दाह ।

अष्टाङ्ग सूर्या २२ वी । पुरातनगौडा मन्त्र
मन्त्रा भाग्यम् ।

मन्त्रपार ३० । यह और व्याख्याया पर
मान्य पद्धतियोंमें व्यवहार करनेमें अति सुबोध है
अथवा अलप्य होता है ।

दुपिशात ६ । पापदानक नाथ गरीश
बसल बसल बानकी बकाल ।

मान्य इव उपायि ।

[illegible]

सन्निवृत्त विद्वत्समः ।

मन्त्रिमन्त्र्य, चार्ष्ट्रना प्रभृति चान्यको
पैडामि, — इत्यादि ।

तर्जय्यासं पुनस्तान् यद्यपि गतो
वा योगे मेमे, — दक्षिणः ।

दत्तिसाहस्रं चोदयमानैः—शक्तिः ।

दामोदर वा दामोदर राय

Dysentery

निर्देशावली । अक्षर, कुशल (टिप्पणी) । १८८८ ।

[illegible]

चारण्य । कदाचन महा वा क्षमा गच्छ मां
दृष्टिं त्वं दृष्टुं विदुः बहुनेन प्रसारं तव प्रदि
नाना दृष्टिं दृष्टुं प्रारण्य है । अत्रप्रसारिका विमेष
विषयः प्रार्थनायाः प्रारण्यं विमेषः अत्रिदादि अत्रिदा
प्रार्थना (दृष्टिप्रसारः) अत्रिदा है यह प्रार्थनायाः
प्रार्थना प्रार्थना है । और यह प्रार्थनायाः प्रार्थना
प्रार्थना है ।

मुहूर्त । कृत्स्न काकारम सह घोडा एकरी
माथ बहुत लोमाइ जागता है । येमही प्रकृति
अनुसार भिन्न भिन्न जन्म धारण करता है । कृत्स्न
का प्रवनाकार घोडा है मग यहमें मौत की कल्प निषर्क
पाद ऊपर दिगें दूरत, प्यास की बमनादि पाका

उपस्थित होता है । समस्त यह दूर न होनेसे गर्भधारण वा पशुकाशमें वानज प्रभव होजाता है ।

वानजोद एक प्रकार कठिनाकार दातोद पानेके समयमें कभि दामनाट पाके प्रकाशित होती है । सामान्यमें यदि साक्षिपानिक संघर्ष धारण कर समस्त दुर्गम सत्य, दा पूय (सडा हुआ) देखाजाय तब पीडा कठिना हो यह ऐसा समझना चाहिये ।

चिकित्सादि । मेवा दो पथक वाष्ते विशेष मध्य (हृदि) रखना चाहिये । रोग काठन होनेसे धान व चावलकीबीजका मण्ड यह का मण्ड पानीफल वा मटोका पानी (पूय) बाहि धाराद्वय व्यवस्था करनी चाहिये । प्वरका न रहना वा रोग का धाराम दोष (मानस) होनेसे पुराने धारउका पद पण्डे मध्यका भ्राम बकरो का दुग्ध वा काया बीज सिद्ध करके दूधमें धराव नही ।

निर्यध । गुधराज गोधूम चटद कलाह मयति दाग भास गुड दशा दा । (माया) तीव्र भोजन दष्टावरभोजन ठण दा धाम का समना नेल रुदन व्यायाम साक्षिपदण सैरुन रत्नादि निर्यध है ।

दुग्ध १११ प्रिय दासे बनावन रई वहा पर पाव

कारना सार्वित्री नन १२ १२ एक फलानन का टुकड़ा
 वा एक वस्त्रन धुन्दा २ वा ३ ॥ १२३ रोगोंको बार बार
 ननी उठने २३३ मरा में वा ३२ ध्य मम टहो खान
 धुन्दा यह कि इसक दिना १२३ का विस्तार होना
 है ।

गुग्गुला (१२३३३ वा १२३३३ चिकित्सा
 दक्षमम मिलनी ।

चिकित्सा ।

एकोमादृष्ट ३ वा ४ । निम्न बहोत मर
 वा मरम बहोत १२३३ मरमको छोटा छोटा मर
 होताति (टमकना) यह मिश्रित वा कथन यह
 धामयुक्त मर १२३ धाम धामयुक्त गुग्गुलादि ।
 डाक्टर बेल माह्व कहता है कि पहले ही मर
 दवा का मरन करनसे फिर छोटा छवि नहीं होती ।

डाक्टर ईश्वर कहता है निम्न मरमे धाम
 कामा सार्वित्री ।

धामनिष्ठ ६ । वा ३० । छोटाको मरमा
 बहोत मरम १२३३ मरम १२३३ मरम १२३३
 मरम १२३३ मरम १२३३ मरम १२३३ मरम १२३३
 मरम १२३३ मरम १२३३ मरम १२३३ मरम १२३३

करना दस्त जानिके बाद जलन, मुख की नेत्रोका बैठ
माना बिडबड़ा निम्पड़ा पसीना पीडा को बठिन
चवस्थामें व्यवहार करना चाहिये ।

व्याप्टिसिद्धा (निम्नक्रम) । सम रक्त
गिरनेसे मुवाफिक पीडा तिम चपेलामें ज्यादा
दुर्बलता । सर्वाणिक प्रवारको पीडा भीतरमें चावका
माफिक दुर्गन्धमय भेदम ।

क्यान्थारिस ६ । पेटमें दरद पीडाका वेग
मकणो पातडियोंका चम जैसे मनके माघ बिम गया
है । कलतानिके सहग मन रक्त की चाम युक्त मन
पातडियोंको चाचनि सहग मनम ।

क्याप्मिकाम् ६ । रक्त की चामयुक्त मन
पेटमें दरद । चन्दान्य मक्खन सब क्यान्थारिसक सहग
होनेसे । वेत माहुर कहने हैं यह एक प्रधान
बीष है ।

मार्कुनियाम सल ६ । चाम की ठी होनेसे
गुददार जानिया नाय सुखमें बिटाको मुवाफिक
खाद मातुम होना दस्त जानिके पहने पेटमें दरद
दस्त होनेके समय टसकपी की पीछे पेटमें दरद ।
रक्त ज्यादा नहीं , चाम मत्त की रक्त प्राय समान ।

पीड़ा में चौपार में बैठने ही तद्गत होने से मृत्यु होना । मन त्यागने मात्र से दरद की टपक सी दूर होना । रात में चारिघ वा मनदार के बाहर निकलना ।

यद्यपि उपशुभ पोषध से रोग बहुत मीघ उपशम होता है । किन्तु सम्पूर्ण चाराम चरन्त्याम मत्ताया नहीं जाता है । सोच सोच बीच में रक्त पड़ना इस प्रकार चरन्त्याम एकमात्रा समफल ३० की मति देना चाहिये ।

नार्डट्रिक्स एमिड ६ । मन बहुत की रक्तमय गति का दुष्कण भयानक दृष्टा दृष्टी का बिना समय पाव हो वेग को कुत्सन । पैर में दरद , सुप्त में चाप का दुग्ध ।

चायनी । जनमय भूमि वाले देग का पांडा चरिराम सचन दुग्ध पोडा आम का काष्म मीठी में पवनमील न जाने से इस पोषध से उपकार जाता है । जनकी मासिक मन दुबलता, हाथ पैर ठंडा रहने में ।

क्यान्केरिया कार्य ३० श्रवा । पुरातन पाश्चात्को पोडा, प्रतिनियत दक्षका वेग । गुच्छ दारको तरफ चाप (खाडा) पड़ना । गुच्छदार होके रक्त को रक्तमय आम शुभ मन पड़ना । यह व्याराष्टा कार्य के समान पोषध ।

पीठामें चौपार्से बैठतेहो तड़ातड़ोसे मस त्वाग होना ।
मसत्वागने मांससे दरद ओ टसकसी दूर होना । रातमें
हारिय वा मलद्वार के बाहर निकलना ।

यद्यपि पुरुष जोरधसे रोग बहुत मोक्ष उपगम
होता है । किन्तु सम्पूर्ण चाराम अवस्थामें मगाया नहीं
जाता है । जोर जोर बीचमें रक्त पड़ना रसप्रकार
अवस्थामें एकनाचा बनकर" ३० वीं शक्ति देना
चाहिये ।

नार्डेट्रिक एसिड ६ । मस बहुत ची रक्तमय
रक्तिका शक्कपन भयानक दृष्टा दहो का बिना
समय चापहो वेग, ओ कुमन । पेटमें दरद , मुखमें
चाप ओ दुग्ध ।

चायना । जनमय भूमि बाने देग ची पोडा
अदिराम नचन मुक्त पीडा 'चाम वा चाम्ब मेहीस
पवनपीन न जानेसे इस बीजधसे उपकार जाता है ।
जनकी सांकिह मन दुखलता हाथ पैर डंडा रहनेमें ।

क्वान्केरिया कार्य ३० श्रवा । पुरातन
आहारओ पीडा, प्रतिनियत दक्षका वेग । मुछ
द्वारकी तरफ चाप (खाडा) पड़ना । मुछद्वार होइ रक्त
वा रक्तमय चाम मुक्त मन पड़ना । यह चारार्हटा
चाम के समान बीजध ।

(०) प्राणिक - यह टडके अग्निस्रोत होता है
अग्नि उत्पन्नहोनेस वा घम घम होनेस यह
होता है ।

(३) अज्ञात भेद, - भागन बिटा हुआ पटा
लोच जो पश्चिमतिर होइ मनहार व बाहर
निहल जाता है ।

(४) योषकालमे उत्पन्न भेद, - अधिक
उत्पाद (तापडा) अग्निस्रोत यह पेटा होती है ।

लक्षण । भोजन के साथ अग्निस्रोत कमि कमि होना
पेट भर आकरा आममिश्रित भंड उठार लोभका
अपरिच्छाद भाव मध्यमे दुग्धि प्रभृति मरुत विद्य
मान रहना । सुप्ताहोना अरुचि वा पेटमे भार
मानुस होना योषकालमे उदरामय होनेस मलमे पित्त
रहना है तिसके साथ दुर्बलता वा अरु भो विद्यमान
रहता है ।

कारण । अति भोजन निमित्त अति अधिक
भोजन के वगैर भोजन होके अधिक मात्रा मानाप्रकारका
आय पदाय देरमे पचनेवाना अर्थात्, उदा अथवा
मडा हुआ अथवा तरकरी अथवा (विना पक) भोजन
अधिक तैल वा मसाला दिया हुआ वा अल्पक पदाय,

क्या क्या प्रवृत्ति तरकारी मसूरका दुध
 मुर, चिड़ि चई मडमेंका प्रवृत्ति मसूरका भाज
 तदे चार्नि पारागेट प्रवृत्ति व्यवस्था करनी चाहिये
 रस चर या भात एष्यविहित । कच वेजका मुरम्बा
 राव नहो । निताम्ब बासक होनेसे दुग्ध देना
 हिथे ।

निषेध । दुग्ध, गुरपाक चो न लव'ण दवा
 दूम यर माय बसाई चना घरहर मुन याक
 दु गुड, लवच ल'समिरचका भास अधिक बन
 तन, ठंडा तापडा चम्बिको मयत चो तल मदन
 राय म, रातमं जमरच चो मयनादि निषिध ।

सन्तान्य ।

चतिमार एक मसाइका जर्नेस उमकी तरच चति
 मार कहते है चोर एकमास वा तिघसे मो अधिक
 दिनका जर्नेस पुरातन चतिमार वा पदयो रोग कहत
 हैं । चतिमार रोगाका व्यादा लवच चो मोस भोजन
 निषिध । मासका काय दनके वास्तु चनेक वेच बोसते
 है कोचि सडिद पदायकी अपेक्षासे मांसका काय
 मोसमोच होता है फसत यह बातही सब सोचोंके
 हैयतनही ।

मासिक बदला इनमें से जो सबसे बड़ा, दृष्टि विद
 कार, जो मासिक दमनद्वार निश्चलता (स्वाम्योपा) ।
 दृष्टि में दृष्टि हर बाग में मासिक रूप में, । धन की दिशि
 दृष्टि में भोजन करने में बदला दीक्षा (नेट सामाजिक) ।
 इत्यादि कारणों से भवते ।

दुर्दिक्ता ६ । इतिनिष्ठता वसन का वसन
 करने की इच्छा । वसन में वसन का धन की सबसे धन
 बदला धन में मुद्राधिक रूप निश्चलता । दमनद्वार (या
 धन का गति) के दृष्टि में धन धन की धन में धन
 धन की धन में धन धन धन धन । धन में धन में
 मासिक धन दृष्टि में दृष्टि में धन ।

आदुरितभासी । ६ । दृष्टि में धन धन धन
 धन में मासिक धन धन में धन धन धन । धन में धन
 में धन । धन में धन धन धन धन धन धन धन धन
 धन में धन धन धन धन धन धन धन धन धन
 धन में धन धन धन धन धन धन धन धन धन ।

व्याप्तिधिया कार्य ६ । धन (धन धन धन)
 के धन में धन धन धन धन धन धन धन धन
 धन में धन धन धन धन धन धन धन धन धन
 धन में धन धन धन धन धन धन धन धन धन
 धन में धन धन धन धन धन धन धन धन धन ।

बिस्में सादा रोषा वा चण्डिकी माफिक छुद्र छुद्र पदाय रहना । गुद्गुदर जैसे फाक होमया है दिनमें वा भोजनके पीछे निद्रा होना । प्राचीन छदरामय रोगमें यह एक पञ्चि चोपध है ।

फ्रैक्चरिफ एमिड ६ । दृष्ट दिनकी पेटकी बिमारी पयवा रोग दृष्टनेस दुर्धन न मानम हो । साटा वा—वा पाडि माटिक मुवाफिक । वेदना गून वावहुत प्रमाणका मनखान, हाना । कपडास मनखान होना । इनदोकी माफिक भेज । नलकी माफिक मन चिमने माय वायनाक कियकक गृह्य पदाय मस्तक जैसे मन जाना ।

पडोफाड नाम ६ । नवान पो पुराने उदरा मयमें उपशीर्षा । प्रत्युष (तडकाड) में भेज मन खनकी माफिक वा टधक माफिक इनदिया वा रुवन रगका हलदिया वधमत्त । वावसुरनके मायही मन्का निरुपमाना । दरदसे रहित भेद करक प्रातकार्त्तमें रातन पीपकानमं दुग्ध वा सुहाफन भोजन करनेसे वा पाएकीक दात निरुननेक समयमें । समान्य पेटमें दरद वा वेदनाग्रन्थ भेदमें । पद्यापक्रम ३१३ दरद वा उदरामय । मउ त्वानके पङ्ते पेटमें हकार शत्यादि ।

रह मय निडाइय मिश्रित मय । भुक्ता युक्त यही
दुग्ध महादुधा मन । समस्त समयपर पादको
मन निहवज्जे मरौरेने दिहाको गन्ध धत्त दीध
कालेन्दा मानुम होय दिहाको गन्ध गर नहीं । बहुत
होने (नडाहाड) पादपाना समस्त तडालडि न
कालन हन्डा न मन्दाहा काय । हाम्मेने वा मन्दा
मन्दाके दुग्धक एनेने दम्माक निहवज्जेन वतु नूत
य न उरिन मन्दिने बैठवन्दा एन्डा मन्दाकम ।
नारिसे (हन्ड) क बाहर निहवज्जेने मन्दाक पा पैरीने
ठन्ड न वन्दा दम्माक मन्दाक मन्दाक मानुम
होय पैरी, मन्दा ।

भिरेंद्रान्न ह ।—वर्षापर हस्त परिधान कला

[illegible]

दाम धरानन्दे विदे निधि दुर दोष्य मर्षा
ममरुते - ७।

एवञ्च ३ ३० अक्षर ३ ३३। द्वावैरिदा

क्रोधादि हेतुके उदरामय,—कठोरिन्द्रिय
ब्रह्मो ।

जान्हाद जनित उदरामयमे,—काष्ठि
धोपि ।

दुग्धशुनिके उदरामयमे,—ज्वर काय
दाह, ममहर ।

भेद को क्रोष्ठवहता पथ्याय युक्त उद
रामयमे—एतद्वत् एतद्वत् धायना भार को
नरक ।

भेद को शिक्को पीडा पथ्याय युक्तमे,—
पथ ।

टिन को रात्रिके भेदमे —सिन्धु विरो ।

साम्भ्रमन मातके भेदमे—एतावत् पान
कठि कठि दाह री कठ ।

रात्रिके भेदमे—एतद्वत् दाह-भार
पान का को धायना इन्द्रा, एतदा भार
सिन्धु विरो दाह पान पान एतद्वत् पान
भेदमे ।

शिरःचक्र प्रोक्ष्य पदात् वरालो मिलादि

माकु रियाम, यहोकारनाम हरिद्रावर्णमे,—इन्का
मारा इपिकाक यामोमिना चायना भवप्रवर्धमे
—यामोमिना माकु रियम ममकर एममटिना
यलोर्दमे —चायना यामहरिया । यस्तोमे
थापहा निकल सानेसे—उम्हलम मिहम ।

उपदग (गम्भो) राग । (Syphilis)

निवाचन । दुदितम ममम लममम्य (लिङ्ग)

पर यह घाव होता है । यह रोग—विष चुहट
चमला कृदा लमपाव प्रवृत्ति परम्पर ध्वजहार करनमे
सक्रामिक राग होनाता है । उपदगविष एक दिन या
दो दिनमे घाटे एकम तान तसाहम रागका घाव
भाव जाता है मधरापर तामर वा लठ दिनक बोचन
मानाप्रकार उपसग खडु हाजाते है ।

उपदग रोगका प्रथम लक्षण ।

अपवित्र मममके पाठे मनुष्य देहम मिच भिच लघ
वम विषका सञ्चय रेखा जाता है ।

इन् सब बिनाके उपसग वा काय थो फन विभिन्न
है । उपसगको तीन चकस्या परिमचित होतो है ।

प्रथम लक्षण । गभीर चत (घाव) ययवा
वाघी (कुपकी) तिनके पोछे पुदपके चङ्गकी भगाही

माकु रियास पड़ोकारनाम, हरिद्राचूर्णमें,—इत्या
मारा रपिहाक, क्लामोमिना चाटना मधुप्रवर्णमें
—क्लामोमिना माकु रियस मण्डक पत्रधैटिना
अजीर्णमें—चाटना क्लामकरिया । क्लामोमि
चापहो निकल जानेमें—उपद्रव निवृत्त ।

उपदंश (गर्भो) रोग । (Syphilis)

निराचन । दण्डितस ममस जननस्थ (सिद्ध)

पर यह दाब जाता है । यह रोग—विष चुबट
चमचा चुटा नलपाच प्रभृति परस्पर व्यवहार करनेमें
संक्रान्तिक रोग होजाता ॥ उपद्रवविष एक दिन या
दो दिनों पाठ एकस तान तमाहम रागका दाबि
भाद जाता है मद्यरागर तासर वा लठ दिनक बीचमें
नानामकार उपमग घट होजाते है ।

उपदंश रागका प्रथम लक्षण ।

अपवित्र ममगक पीछे मनुष्य देहमें भिन्न भिन्न मस
सम विषका लक्षण ज्ञेया जाता है ।

एक मस विषाक उपमग वा काय को फन विभिन्न
है । उपमगको तीन अवस्था परिनिश्चित होती है ।

प्रथम लक्षण । गभीर घत (घाव) अथवा
बाधो (कुचको) तिनके पीछे पुश्तके अङ्गको अगाड़ी

है । पात्र बन इस रीति के लक्ष्य के जानेका बहुत दिन
मिना होगया है यह छोटाबु टेहके भीतर सत्याहृदि
होई प्रदाह रोग लक्ष्य करता है ।

वग परम्परा का उपद्रव ।

दिना नाश के उपद्रव होनेसे सम्भावनाके पावन
वा हों महीनेमें गणनाय होजाता है । यदि सम्पूर्ण
चरित्रा प्राप्त होय वे लक्ष्य के अनेक जगह मरा हुआ
भूय लक्ष्यता है यदि बाधक दीवित प्रयुक्त होय तब
जग-कालमें किसी प्रकार का लक्ष्य न मानुम होय ।
मरणात्तर बाधक लक्ष्य लक्ष्य करनेमें बाधकत लक्ष्य
मानुम होय । इसके अनन्तर होय वा लक्ष्य मरा
होई बोधने मानकहा क्रमसे लक्ष्य भन भी लक्ष्य
होने लगजाता है । पहले नामा दिग्में जननके लक्ष्य
प्रकाश होना है गण्ट लेखामिथित सडा हुआ नाशके
निश्चयना और नाशिका रम्युने लक्ष्यका लक्ष्य मानुम
होना बाधके लक्ष्य होना है एसा भ्रम होना । कमसे
गोनी मक्षिण भी हेंडे हेंडे लक्ष्यके लक्ष्य वा गोप
लक्ष्य हो वे गिर जाता है ।

१ प्राय लक्ष्य के लक्ष्यमें टगा लक्ष्य प्रायामें लक्ष्य
लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य (लक्ष्य) लक्ष्य
लक्ष्य । लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य लक्ष्य

करना व दिने । तब पेट पर एक कुपानेन का टुकड़ा
 व १४ इंच का चप्पा डोना है दुबल रोगीको बार बार
 लहरा व न रना मरारम वा वेड प्याममे टो करान
 चप्पा १२ 'त इमक विना योडा का विदार होना
 *

गुश्या रक्षापाटा वा ऐलेखी चिकित्सा

रक्षकम 'मनम

चिकित्सा ।

एक न टुकड़ा वा १२ 'त इमक विना योडा का विदार होना
 च १४ इंच का चप्पा डोना है दुबल रोगीको बार बार
 लहरा व न रना मरारम वा वेड प्याममे टो करान
 चप्पा १२ 'त इमक विना योडा का विदार होना
 *
 एक न टुकड़ा वा १२ 'त इमक विना योडा का विदार होना
 च १४ इंच का चप्पा डोना है दुबल रोगीको बार बार
 लहरा व न रना मरारम वा वेड प्याममे टो करान
 चप्पा १२ 'त इमक विना योडा का विदार होना
 *
 एक न टुकड़ा वा १२ 'त इमक विना योडा का विदार होना
 च १४ इंच का चप्पा डोना है दुबल रोगीको बार बार
 लहरा व न रना मरारम वा वेड प्याममे टो करान
 चप्पा १२ 'त इमक विना योडा का विदार होना
 *

चमनिष्ठ ६ । वा ३० । जेहाजी ७

रक्षकम 'मनम
 एक न टुकड़ा वा १२ 'त इमक विना योडा का विदार होना
 च १४ इंच का चप्पा डोना है दुबल रोगीको बार बार
 लहरा व न रना मरारम वा वेड प्याममे टो करान
 चप्पा १२ 'त इमक विना योडा का विदार होना
 *

मूदामें,—वेनाड सिगावेरिछ, माकुं ।

वाघीकी प्रयमावस्थामें,—चास—चायोड
वेनाड क्वाति—चायाड माकुं ।

पारदाटि अपव्यवहारकी पोछे,—चास—
एनि क्वाति—चायोड द्विपार ।

धातुगत रोगमें विविध चर्म रोगमें,—
एसिड—नारट्टिक पुन्ना द्विपार चास—चायोड, परम
इत्यादि ।

अस्थिर घौडामें,—परम चास क्वाति—
चायोड एसिड नारट्टिक फाटोलेखा सकफरा ।

धून (घाल) छठ खानेसे,—द्विपार,
नारट्टोप एसिड—नारट्टिक ।

नैत्र रोगोंमें,—वेनाड सिगावेरिछ, चास
माकुं—हर नारट्टिक—एसिड ।

बालकोंके नानाप्रकारकी उपसर्गों में,—
चायोड द्विपार, माक एसिड—नारट्टिक इत्यादि ।

प्रथम अवस्थामें घाव छूट सास को गभीर होनेसे
घोर सामान्य छोट लगनेसे निधमेंध धून पड़के हिम्वा
होटे घाव छपर दधिसे माफिक पदाय समजानेसे को

जेना चारिणे वाचो होनेसे—मात्रु रिदस मारुडिच
एहिउ परम कायें मीत्रि टेरनिम और मरीरमें दरद
होनेसे—परम कायेंमिच माकुंरियास मारुडिच—
एहिउ देना चारिणे ।

चोपध—सदस ।

थार्सेनिक ६ वा ३० । परम दाम्हा दाम्हा

घाव काकारेण चारुवर एधुन जजन एधनेशमा
मामौध चाटनगनेसे रहघाव धातुगत उपदम घारेक
अवधरहारसे मार अहुमें समराम ।

परम मिटालिकाम १२ । नीच उपदम वा

रहकी दूसरो दवम्या बाजकोको दाहा पारिका एध
मरहात नेत्रोम, चलिदयका बाकाल भासिकाखिर
अध वा केरिच घोनसरोम नाकके भीतरमें घाव होउ
दम्य वा सहा पूषा जाव ।

हिपार सल्फर ६ वा ३० । दम्य दो

मधुटा आकाल होना पारद दो उपदम दोनी ची
गरागमें रहना हलिदीमें वरद माना प्रकार घाव पों
अम राम घाव हाके अरुद पाराम न होना ।

क्यानिघाट ६ । मुख पों मसेमें नानाप्रकार

उपहा एधुन वा नानाप्रकार दग्द दो अम राम

चतु विवरण । (Menses)

श्री जननेन्द्रिय (योनि) से निदिष्ट समय पर प्रवृत्ति को स्वाभाव्य विशेषतासे चितने प्रमाणका योचित सहाय पत्ताय जाय होता है उसको चतु वा रत्र कहते हैं । चतु चाय ठोह मोहको मासिक जानैय यह शरीरका रक्त नहीं है और शरीरके रक्तक मासिक स्वाभाविक चदस्थाने प्रमापट भी नहीं बधता है, किन्तु सोइक चनेक पत्ताय समर्थ है और तिसके साथ अरायु योनिगारसे पच्छरम वात्ता पदाय बाहर होता है । इस मध्यस्थमें कोई निदिष्ट कारण नहीं दिया जात । मरन क्षियोंके कम को निवस क्षियोंके ज्यादा चतु गार देखा जाता है । शरीर दुखन को शयन पवस्था भेदमें किसी किसीके समयका अतिशय (कम ज्यादा निम्नमें चतु होना) होता है किसी किसीके क्षितनी की विभिन्नताभा मानुम होता है । किसी किसीके दो मैन-दिनम किसी किसीके पाच हय दिन को किसी किसी कोक पाठ नय दिनमें सोलित वस्य होता है । यह अधिक ज्ञान तक पढ़नेमें स्वाभाविक हेतु रोग बोजक घग जाता है । इस चतुका वस्य को प्रकाश जानको को- स्मिरता नहीं है । इस सोमोंके देगन ११ म १२ दयक बोधमें अनेकप्रधान देगने दो एक वय

कारण । लक्ष्मसे उत्पन्न हुए किसी प्रकार धातु न्न दीडाम करायु या दिव्यजीपकी विव्रति करायु या मुखरम् हाके व करायुका विद्रु हक आना यलोचद (हारिजन) रहना । यह येषीक कारण जानेसे कनेक लान ककत पच्छे डाडर हारा यल माधन (काहा खारी) कराना चाहिये ।

किमा किर्म हे मारारक किमो प्रसारकी दीडा न हानसे भ" अधक विलम्ब से को धमका एतपात जाता है । उन्ह वल्ल विविधा का कुछ प्रयाजन नहीं है । साधारणन बहुतही जिनोह कतु जानेक पहले महान महान कमरमें दारद पड्डाह यरीरमें पडुप मादमें दारद काधन चटका लघव समूह कितनेक समयक वास्त हाक भाव नहाक बापवा दम जाता है काय ऐसी जिनोह मारारका कोरे दीडा जानेसहा कतु काध नहीं जाता है । लक्ष्मक अनुसार दीवधम दह कराम होत्रता है । और काय रनहा सब दोष धोका प्रयाजन होता है ।

काण्डिका समक, कन्देष्टिका मारमिमि केरम विमिविचिदुना कम्बरन डुम्बर चादना या श्रुताम विमिविचिदुना ।

रक्षमात्र होति तिमहा वम् । रक्षमात्र

व्यानक्षेत्रिया कार्यदिका १२ । दृढस्थान

बालु माघ मदि और कामों और ठंडा रहना दृढ
पथ होता, समयमा भी मोटा मरार लहर लट्ठा
माया घुटना मरदा मायागम किन्ही पजारकी ठंडा
मरमा मर न होता ।

ब्रायोनिया ६ । नाभिकाम रजसाय दौट

बहता कठिन को सुखामय निर रहनरा रखा
भोजनक पीठ पीठ पर दखर का बाभर माग्य ।

पाफाइटिस् १ + । कभी कभी क हा या

कम रजसाय को निमक माघ पट या पट में दाद ।
रहीरक विभिन्न स्थानमें दागडा दागडा रुपनी
(कनाडा) और उनमें गट रजसाय । रजसाय स्थानमें
योनिके कर्मन या चुनकामि । यीजनक पारक्य
“एनसेटिमा” और रजकाममें पाफाइटिस् प्रधान
दीपध है ।

नेट्राम मियुरियाटिकम १० । हर रजसाय

बालमें प्रमातकालमें कितनेक घटाके दाखे रिपाद को
बमन मिट उदार को नानाके भाय रजका निकलना ।
हररोत्र मातकाल माया घुटना को आमनक एनेक
समय पटल रहना । मोटबहता, मरत्यागनेह मरुहार
फटके निमसे रज पडना ।

होना होना दो मरनकी माफिक जनमाना रणसावरे
बदले जादा जन बाहर होना दोष बीचमें हटिमें
धननापन होना पैरोमें बाव होना समावत पैरोका
दमोना बावसे बन्द होनासे रसी पीडाको हटि होनेसे ।

यूजा वा सिलिसिया ३० । ने बीचसे टीक
दिया हुआ पता होनेसे हेतु भूत पीडा होनेसे इस
रोगकी उत्पत्ति होनेसे व्यवस्था करना चाहिये ।

रक्तुका पाधिक्य वा रक्तमाधिक्य ।

मैनोरोर्रिया : (Menorrhagia)

रक्तसाव सबकी बराबर नहीं होता है । किसी
किसी वयकी ज्यादातर अधिक रक्तप्रसवितो जाती है ।
त्रिचन्द्रर कदा रक्त होती है उसमें ज्यादा साव होनेमें
भी रोग समझना चाहिये । ३११ दिनमें अधिक साव हो
भी कहता है या अन्य अन्य साव लेखिन अधिक
साव तक वह बलमान रहता है अथवा सामुनी साव
होके चतुर्दश पन्नाकालमें धीरेसे सफ़ा प्रकाश होना ।
एरीर दुर्बल होनेसे भी मालूम करना चाहिये जो
एसाभाधिक रूपसे रक्त निगमन होता है ।

पीडाका कारण । सनेन्द्रियमें किसी प्रकार
को पीडा ददा—दर्भुंद जन, कष्टटिहा इत्यादि

मोह, घाममें भन् भन् करना व देखाई न पडना
पेट फुलना उच्चार घामसे भी न घटना, प्रायही वेदना
विहीन रहलाव ।

मेवाहुना ६ । उल्टवन सास वा काना चडा
चडा रहलाव, कमरसे पेटके घामने तक रह रहके
दह मानुम, सामान्य दिसते बसते सावको हडि किन्तु
बसते फिरते साव डाल ।

ट्रिमियम ६ । अभावत अधिक साव, जतु
बन्ध होके १४।११ रोजके बाद दिनते होवते एकछात
अधिक रहनिगमन प्रसव वा ग्मसावके अन्तम लिप्त
निष्ठको साधारणत अधिक रहलाव ही सक्षता ह ।

सिमिसिया १० । अभावस्थावा पूर्णमासी
घोद रहम विमारी हात पीर पैरके तनुर पसना
होला ।

याफार्डिटिम् १० । मोटा शरीर हात पीर
पैरके तनुरेमें दुगन्धयुग्म पमिना अन्तमें जाला पकार
एत पीर वहासे रस निम्नन कानके पिछे धार ।

जानू दद न कर १०२४ चण्डा तब बदना है दोर बागु
साधने परदा बाहर पवित्र राव हरदत्त जगुबागमे
हो मिरलाला वा ग्यामि तबनिक दया आता है ।

क्षमसिद्धम् ६ । दोष दोषम प्रथम दृष्ट दौर्द्धा
 या न्याभाटिके न्याय (भाटिकेनद्वितीये अध्याये) ।

ब्रह्मसिद्धिम् ६ । एतद्वन् वेदना दधिक
 तान् सव द्योता उपेता वाद परम सुप्ती वाता ।
 ददम द्योता वाद वा वाता ६ मही मग्ग वाता
 मही वाता ।

एषिमा ६ । दिव्यशेषम एषाद या जलन का
दृष्ट दौरे उक्त मानने दृष्ट । समरम खल जनन पीत
महर्षि मास्त्र टपक टपक नाम पिनाय बाना ।

हामामन्त्रि १ २ । एदिसक माफक विधि
इमात्र लसद नहो दयाता ।

धीरास्तु १२ । यस्यायुः सप्तमं यत्
 यस्मात्तु यत्तु १३ । कीदृशं यत्तु यत्तु
 त्रिंशे उत्तराय १४ ।

ਏਨੇਤਾ ੬ । ਸਾਧ ਸਥਾ ਪੰਥ ਥੀ ਪੀਠਮ
 ਟਟ ਸੇਥੇ ਨਰਾਯ ਨਿਵਨ ਪਤੀ, ਰੰਧੀ ਦਾ ਹਿਰਮ
 ਖਸਤ । ਘਰਸੇ ਪਿੰਡ ਧਾ ਪਿੰਡੁ ਕਰਮ ਰਾਏ ਫਟ ਆਨੇਕੇ

पोतेकी दिमारी (पकाइटीम) Orchites

रश्मिदासजीमें गडबड़ जानेका कारण मधोमें पृष्ठम उदर होतो है ममें मीटो बड़ जानेकी पड़गिरा कहते हैं ।

कारण । स्थानविषय पश्चिम पक्षमा उस पर दाव पक्षमें रश्मिदासजीमें पक्षम चरु कीटबड़ता पित्त वा दग्धाद्य कारणसे ये पीडा लगती है । ठंडा सन्ता वा समावस्था पूर्णमात्री एक तरफसे पोतेमें दद वा दुषार होना उसकी पड़गिराका लवर कहते हैं, या सान्तर वा पोतेका लवर कहते हैं ।

चिकित्सा ।

• ठंडा लुगके दद होनेसे,—रसटम ।

घोट लगनेसे,—पानिका ।

प्रमेह वा धानु की दिमारी के बान्ने,—
माकूँ पक्षम ।

दहुत दद होनेसे,—शामामेतिष ।

समावस्था पूर्णमात्री वृद्धि,—कालकटिया
वा साइली ।

सक्रियता । अपरिच्छिन्न कृमि वायु वा माधुर्य रोग उत्पत्ति का कारण बनें इस रोगक उद्घोषण कारणके बोधमें होता है देखकर, शरीरमें मलाप डाम इसका एक प्रधान कारण है वह बोलक स्थिर किया गया है । इदानीं के बहुत से चिकित्सकगण कोमा ब्यासिली (Coma Bacilli) नामक जीटानुसे इस रोगको उद्घोषण निरर्थक किया करते हैं । जिस कारण का इस रोगको दूषित करने तक रोगका प्रकाश पुनर्भाषमें हुआ करता है । इसवाक्य इस वाक्य आगम बहुतसा लक्षण देखा जाता है । यह लक्षणविशेष चार भागमें विभक्त किया जाता है ।

प्रारम्भ वा आक्रमणवस्था । (Period of incubation invasion) इसमें विष शरीरमें प्रवेश करके रोगीना उद्घोष प्राप्त हुआ करता है । दो तीन दिनमें कभी कभी एक सप्ताहक बाद चर्मीयता सामान्य उदरामय किसी किसीकी पल्प वित्तमित या बिना मलका दस्त और कभी कभी पेट भारी मानुस करना या पेटमें दद सहित मलस्वाग हुआ करता है । कानमें दम् दम् भन भन शब्द गिर गीटा, दमन इच्छा मानसिक अवसक्तता वा शरीरकी दुर्बलता मरुति लक्षण प्रकाश होता है ।

भरन का हो जाता है और उन्हीं टन्सक पय ना,
ठन्स कम हो जाता है ।

उन्ही चक्का में चाराम न दा क छोड़ा बट क
हतोय या पतन चक्कामें परिचल होता है ।
इसको एमजिड का कोलस चक्का कहा जाता है ।

इसमें पिठना कमन दस्त घ्यास और मीनमना
परिचल बटके रोगीका भयानक कष्ट जेना है । मुख
क दम बन्द होता है । चन्द्र भाग चक्का परकक
माफिक ठण्डा हो जाता है । रक्त चलना छोड़ा कोलक
चारण और का टन्सादि मिथितता हो जाता है ।
य च बन्द हुए जाता है । दाँठ नीमा देखाता है
भीरमें चुटकी भरनस कमका दाय बहुत देर तक
रहता है । मुखमण्डल का गानम बंद बंद पसोना
हुआ करता है पेट फुल जाता है शरीरको कमनक
वाप्ने कहा करना चाहिये । अगुमियां पानीमें रखन
में उसे मिहुटा जानो है वसे हो हो जाना । व्याकुलता
का बन्ना मरिचकमें नाडो का न मासुम पड़ना
कभी कभी कोहनीके पास (त्रिकियास) और कमन
(एकजिम्बारी चमनीमें) तक नाडो मासुम नहीं
पड़ती । गन्धीन छोड़ा छोड़ा दस्त हो सकता है
लेकिन दस्त बन्द होके पेट फुलता है और रोगीका
पायाज बन्द और घ्यास कष्ट उपस्थित होता है । उ

रक्षितिया कहते हैं । इसमें बांध काज कोम सुधी
निरा गूथता के हाटी का हलरु होना पनाप
बेहोम का मल्ल हाक रोवीका भवन नट करता है ।

(८) विश्वास मल्ल्य उपस्थित हाक टारपेट
ज्वर का लक्षण देता) सर भजता है ।

(९) पुष्प भ रोगी रम रम चरित्राने दुबल हाजम
शिक्षन व्यापित हा मजता है । पाठ पाठ्य कर्म
तब होत बांध (बमट जमिक उपक्रम हाता है ।
गौर पोत स्थानमें मासाध पाता या पुष्पाङ्गमें चार
होमहा है ।

कर्ममूल और फलदा में जन्म हो रहता
है बमन वा हिबकाने रागोका विनिव लग हाता है
निजिन हम मजने वा कामिप'व्यापिक मतम विहिता
हामम (धारक वा निजमर उत्त वाच्य) अधिक सेवन
करानम हम उपसन का हरवधत हर नही रहता यह
बहुत प्रथम विधार्ति मय्यह माधार्तिक राग है । हम
का विध धमनानोका (In e mal Canal) विधेय
हामने धाकमध करना है । वहा बहुधापो धाकारम
धना न होत जगह लगह दो चार हुआ करता है
वहा हमने उत्तनी हर नही होती । इसमें भीत पेटम
हम अधिक दम्य हा बमन और बमनम धमभुज
हम उन मय का बाहर होना, और यह मयन भूरा रम

भी देखाव न हो। चयन बहुत महत्त्वपूर्ण है कुछ बूट हो
हो या न हो तब क्या न्याय देना चाहिये। चाय
का प्रयोग रक्तमि मानुष होनेसे बनेडना जरूरी है
या दामनियम देना। तबलाको चयनमें रोग और
दवाय पायदा न होनेसे चयन देना। लसि नचप
होनेसे मिना २। टी तीन मात्रा नवन करनेसे पायदा
जाता है। (यदि दियको जानेको धनमें रोगो
धनमें चयनके छठ पड़े वा कान्ध सुनाइ न पड़े तब)
बनेडेंगा। दियने चयने दियको जानन — चाय देना
टावनिम। दियकोके काय पेटके अन्तर में जाना
रोग दद करना है। दियमें देखाव जाना रोग सुचन
चयन मिहमनेसे जातोनिम। सान्ध चयन या
चयन तबलाके पी नच बाय दियके छ छ रोगका
हम पेटका जाता हो तो दन्धटिमा। छ छ बहीन
निरे दियिया ३। दियकोके सान्ध तबले दन्ध रचने
में — सान्ध। जिमी तरह चयन न होनेसे चयनियम
को हमसे भी चयन न हो तो कदम देना।

देनेके दन्ध सुधार होनेसे दन्धोनादत धनमें धन
चयन चयन न हो चायी रोगमें दद चयन रहनेसे—
जातोनिम और रक्तमि दन्ध। चयने दन्धेमान करना।
देनेके दन्ध पेटका विमारी जानेसे—चयनियम दन्ध
उमसे पायदा न होनेसे चयन दिया जाता है। देने

हैजा की राक्षसी का उपाय ।—मरण

गंगा यमोस, भस्म हस्तादि मृग करना बात जानना
विषम वा लडाटा भोजन एवं पका भोजन वा घास
खाना प्रभृति की सब बातोंमें देना हो सकता है
वह निषेध ।

हैजेक बसत गरम बन ठण्डी करके पीना बहुत
कार है । सब चारों तरफ हैजे की महामारी वर्णव्यति
होय तब भी दृष्टम ३० हर दो दिन बाट एक एक
दोसे लक्ष्मि लपकार हो सकता है । कूलक भीतर
गन्धकवा बुका भरके घास घट्टिमनमें देना होनैयो
गन्धकवा कम है हमक मयाव एक पैसा या एक छल्ल
देना हल करके कमरमें घट्टिमनमें भा हैजा नहीं
होसकता ऐसा लछा गया है ।

ह्याम्पर बच बोली १३म काने का उपदेस है
किन्तु यह बहुत निम पुन पुन खाक धिन्की बिसारी
वा बन्नीमें दस्त होत दसा गया है । इस सिधे अपूर
क्यादा करके व्यवहार करना भी कभी दस्त नहीं
है । हैजेक बहुत शुब साफ पानी पीर माना खाना
बहुत अदरत है । जिस तरह पानी साफ करना चाहिये
वह तन्दुबस्तो को बितावमें देखना चाहिये । हैजेक
पचम रोज सबेर व शामको घरमें धूप व गन्धक प्रभृति
का धुपों देना व हमसा प्रकुजित रहना अच्छा है ।

घोर घास भी ठरटा भासका राजा नाना घोर धीरे
घोर टान टानके जेकना । औरने नशा करना । सर
मह नाडीका मो" । उल्लसहित दस्तु इसमें २० की
महो पड़ी है ।

उल्लोनाइट (हिमाग चवन्ध्यामे १ x, प्रति

क्रियावन्ध्यामे ३०) सुन्दुमय सर वचन महिन
दस्तु बेचेनी घट दद घास हतगिष्टकी क्रिया
जम लोरी । डाक्टर मन्मन्मान्न वन्ध्यापाध्याय यह पठिते
मे ही घासहार करनको कह गये हैं । इसके प्रयोगसे
दस्तु काके रोगकी तथा घट क्षति देखा गया है ।
हिमाग चवन्ध्यामे सामानिक भिरदाम प्रभृतिसे विरम
होने यह दशम विशेष फायदा हुआ है ।

एसिड हाइड्रोमिथानिक ६ । डाक्टर सरकार
मे इसको सुतमपोरनीको बिताव दी है । नाडका
गायक होना कब यरारमें ठटा पसीवा दयेर इच्छा
के दस्तु, धाममें कष्ट घोर उदायो घटमें दद
इत्यादि । डाक्टर मादुडो मद्दामयने इससे वन्धु रोगियों
को चाराम किया है रोगी खान न सक तो घास
देना या मुधानेसे भी काम होता है । इसके बन्नेमे

‘ लरोसिरेसस ३ देनसे वयकार होता है ।

दाहकी दृष्टा प्रशस्त होनेसे निम्नलिखित कई एक दवाएँ दीने से जिससे शुष्क लक्षण मिने बड़ी देना चाहिये ।

कान्यारिस ६ । घड़ी घड़ी पेगाबकी दृष्टा बगैर पेदाब न होना मूत्रविज्ञार प्रसाप तन्हा पदमोप ।

टैरीविन्योना ६ । कान्यारिसने उपकार न होनेसे व चत्वारिधक पीट खुला रहनेसे यह दवा लहरी है । कभी कभी यह प्यज होनेसे कानिबार ६ या बेल्लेडोना १० देना चाहिये ।

मम्निष्क लक्षण ।

मूत्रवपुडे साथ वा मूत्र त्यागके बाद भी यह व्याधि हो सकती है । लक्षण मुनाबिह नीचे लिखा हुआ दवा व्यवस्था होता है ।

बेल्लेडोना ३० । रोगीके बिरमे दद प्रसाप पांच साल ।

हायसायेमस् ३० । सुदु प्रकारका विज्ञार, सक्केद साथ चत्स प्रसाप इत्यादि ।

एामोनियम ६ । रोगी भोजनसे छठता मारता, बिज्ञाता इत्यादि ।

एपियम ३० । मगट विज्ञार, चीबता,

पेट फूलना ।

पोपियम ३ । डक्टर सानथार इसके बहुतही
बखशाती है । एलेग्जाविक विज्ञानसे यह ज्यादा
मन्दा द्रव्य होनेसे कुशल प्रयोगन । ऐसे मीठे
पर हम लोग नम्रममिडाके पचपाती है ।

दुर्बलता और सामान्य उद्गरामयमें—

एडिड दस चन्दना वा मन्डर ३ ।

कपमून प्रदाह ।

मार्क-सल ६ । एडिड दस चन्दना वा मन्डर ३ ।
दस ।

चिपार सल फार ३० । इसके उद्गरामयमें पोप
मन्डरी हो मन्डरी ४ । नियन्त्रममें मन्डरी दस मन्डरी ५ ।

वेनेडमा ६ । एडिड दस चन्दना वा मन्डर ३ ।
दस ।

अध्यायत ।

एडिड दस चन्दना वा मन्डर ३ । एडिड दस चन्दना वा मन्डर ३ ।

हनि लक्ष्य ।

एडिड दस चन्दना वा मन्डर ३ । एडिड दस चन्दना वा मन्डर ३ ।
६, लम्बा (दिनक) एडिड दस चन्दना वा मन्डर ३ ।

ठंडा सन्डे बेउ जामिडे पुश्चका पोता दोर दोरतो
की दाती पुस जातो है ।

चिकित्सा ।

मार्कुरियम्, फायोडेटस् रुब्रम् ६ । दमश

चूर्ण दिन रातमें ३१४ दफे देना अच्छा है ।

हियार सन्फ (३०) निम दो बख्क दैनमे
दद बटने नहीं सज्जतो ।

बेलेटना ६ । कुपनकी समझ सानी व दद
धीर बुधारेम बाहियाद बकना । हामक बाद पाडाम
यह फायदा करती है ।

मलसेटिला ६ । स्नान या पोना पुचनेसे
यह दवा देना मुनाफिब है ।

धीर दूसरा उपाय । गरम पानोका सिद्ध
देना धीर फनालेन वा रुग्णक बाधक रखना , ठंडा नहीं
समाना । इसके सिवाय मार्क्यू-सस ३ बरसकरिया, रस
टस बगेर सेवन किया जाता है ।

कर्णगूल या चमका दद (इयार एक) ।

(Ear ache)

निवाचन । जानने सानी फायदा धीर देनेसे
तइटीक, दपदप करना, एनार नहीं देना या रुब

मशरमें घून व दुग्ध होनेसे मरेरे सामथी चार्सेनिज
घोर कुछ दिन बाद रोज एक दूधे कासबेरिया देना
मुनाविह है ।

चार्सेनिज ३० । दुग्ध पादमिषीको मशर

से मापका एकडामें हाजा होना ।

क्यालकेरिया १० । मण्डमाचोय धातुपल

बाजकीके बहुत रोजकी पीठामें खवन योग्य ।

सार्डनिसिया ६ । पतना मशर घोर उसमें

ग्यादा घन्बू, कानकी हल्ली का पंड़ा हर सप्ताहमें
पीडाका बटना ।

मुलेन अयेन । निज घटाके बाज कानमें दो

बार घुद देनेसे बहुत फायदा होता है ।

खासो वा यनयम (Cough)

खानी बहुत रहमको होता है रोग पहचाननेके
बाने चालीको प्रकृति बहुत ही मदद करती है ।
जमका खाते घटने स्वतन्त्र पीडा नहीं है । दूसरी
पीडाका सख्त वा सखी साथी होके बना रहे । कफ
घाटि बाहर करनेके बाने या दूसरी पीडा प्रकाम
सख्त दिवाके बनो रहती है । यदि सपकार नहीं
भाव तब हममें खानी हो सकती है । मासनाचो वा

दिवादि भाग, इतिहास भागस्य भाग १३ भाग
भाग १३ भाग ।

कार्वाभट्टविनिम् १० । एताना नन नद
एना दोर नन एता निमना दह दर दह न । वा
एक न , एता नयनं एतापोदा वदना १ न दोर
मवर नाट देखा निमना एनाम एनाम एनाम एनाम
एना ।

ਦੁਆਰਾ ਮਾਰਾ ੬ । ਚਾਲਿਸ ਵੀ ਠਹੁਰਾ ਜਾਏ ਵਾ
ਮਾਰੇਓ ਸਾਖ ਧਰਾਈ ।

हाद्योसायंसम ६ । एतच्च सरस्वतः पानी
 सागरं पानीका वचना नठकः भठः एव परं वाराम
 एतच्च वसवसे ३ । शुषा वा... एतच्च वसवसे ३ ।
 एतच्च वसवसे ३ । एतच्च वसवसे ३ ।

द्विश्वास् ६ । एषा नमसाहृष्ट श्री गाम
 रोषश्च यान् एतन् प्रीतिम् उवाच नमः देवा
 मित्रान् न भवन् । एतन्मि त्वमहं गाम उवाच
 एतन् प्रीतिम् एतन् प्रीतिम् एतन् प्रीतिम्
 मन्त्रं वदन् ।

कैनिवाइलमिक्स ६ । मरमराइट खादी
डा.म.म. दारु, म.म. माय, म.म. करना खादी ---

घाने धोर विविक्षासे धागो खादे हो धोर खादने के समय माथा खरदख धोर हातोमें दाब धरता धोर उसके साथ हातोके भीतर दरद बाध जाता हो तो कम्परस देना उचित है । यदि मध्या या रातक क्षम दरम रनेक भीतर गुडगुडा बोध हो सुधी धागो खादे धोर उसके सन हातो के भीतर दाब धरनेको भाति बाध हो तो कम्परस १० गति देना उचित है । यदि रातक समय विमेष करके धोनेपर हमका भाग हो सेविन छठके बैठने पर धागो न हो धोर हमी तरह धागोके सङ्ग धरना न पड़े तो हायो दावेमम देना उचित है । हम तरहकी धागो हायो दावेममम न घटने पर (विमेष कर धागोके बाद) पण्डे दिला दिया जा सकता है । यदि दिनक समय धागोके सङ्ग धोना पड़े धोर रातमें कुछ न उठे तो पलसटिना पथा है । हम तरह धागोके सङ्ग धादवद रहनेसे नमममिका धोर सडकाके पथम (विमेष कर मज रहके पतने दम जाती रहने पर) धागोसिना देना उचित है । यदि एक घाट ठछा नम धोने पर धागो पटे धोर धादनेके समय दम घटनेकी तरह भाव हो तथा धागो पर गहोर हाथ धेर बाध तो क्षम देना उचित है ।

दवा लघुप ।

एहिने एकमात्र १५ मज्जित घण्टावकमसे कश्चित्
६ अक्षर करमा उचित है ।

इससे धावदा न जानेने एहिमज्जित ६ । धारमज्जिता
धोर मरम भाव देखनेसे दिवार मनकर ६ । मज्जित
धारमज्जिता होनेसे कश्चित् ६ । अक्षर भाव कदा
दिखनेसे ही एक मात्रा जोपियम ।

डाक्टर सासकार एलिज (Esolin) नाम दवा
हैनेको कहते हैं ।

डाक्टर जोमुक्त इरनाथ राय महायय दिवारसे
पचपातो हैं । श्रीमिदम वा धारमज्जिता समय समदने
कावदा पादा जाता है ।

जामल (नेवा) । (Jaundice)

जो श्रीग सदा पुष रहत है रात जामल विस्त गिरा
वे धार, मध्य धीन वा धन्याय नगकी वस्तुए क्वाद
अक्षर करते हैं उन्ने नेवा रोग दाखता है । नेवा
रामने धाव तथा मारा मरीर पीला दाखता है । पमाव
धेना मान परन्तु मज्जिता रङ्ग फोका धोर कभी माटा
क्वा करता है । इसक सङ्ग धोडा बहुत दोखार भी
रहता है ।

हर घावे और मोत मोघ हो, छणा न रहे, मस्त्राक
 व यह त्यागे का तो घर्ममिटिमा जना । यदि
 भका रह घोछा और मुख तोता होनक महु रिम
 हो किन्ना घर्ममिटिमा पाकर पाठना न हो तो
 यामोमिमा १२ दिवस जाता है । छोटे छोटे सदृशवि
 नैवा होनेमें विशेष करके उसक साध मदक का मध्या
 रात्र और कीद मोदम सेकर टपने पर लुप्त होत रहा
 जाता है उस समय यामोमिमा जना जरुरा है
 यामोमिमासे पाठदा न जानते मध्यममिमा जना ।
 समझे भी पाठना न होता मात्रिमिमा लिया जाता है ।
 म्भाइह्यामं रम गमनं पम्पुहम भी चन्दा है ।

आनुमद्विक्रय उपाय । इनका और मरत
 होत दय है । मरती मोन पाना मना है माझा म
 द्वागम समनानीवु नमरम और पन्थ दई पन
 दना चन्दा है ।

लनि । (Worms)

लनिम विविध रोगक कारण पना । जान है ।
 लनि कई जातिक जमे जात है । सब तरहक नमिज
 द्वागम नाम ॥८ - है । इनने माध लई

मध्यिम चिकित्सा ।

गमावन्त्यामे खीठवहता । एतुदिग्ग, मध्यम

कोटिदम निदिता ।

मूर्तिश्या ऐवमे, — बलोन्दा ।

अगरोगोको, — बलिनेन्दा मध्यम ।

बाहुमोमोतीधि मध्यमे — बलो मध्य

माहबोद कोटिदम मध्यम ।

बुनावनेनेके बाद, — बलो मध्यम ।

ममाल्य । इसमें पाठदा कोनेह निम्ने बन्धा
कोष निर्विहित दुष्टदष्टने निर्वहने हेतुने निर्वह
बन पादा बला है को इसने निम्ने बन्धा है बन्धा
बला मध्यमे है ।

गलेहे मोतर दाद और घाव ।

(Symptoms, I 22 १)

निर्झावन । मनेने मोतर दाद मनेने के हे
को दादमने निर्वह दोषे बाने है को दादमने बाने
है । इसमें मध्य मनेने दाद मनेने निर्वहने मध्य
को दाद मनेने दाद मावूम को है । दाद

मन्त्रे मे भीतर सुधा रहना किन्ना मायुन घोले कमकी
 तरह सार गिरना ध्याम न रहनी सुनी जगह हजाम
 चाराम चौर घरके भीतर रहनेमें तकनीक योग में
 एपिम ६ : देने का व्यवस्था है । तन्मिन्नका यह मन्त्र
 पराना जो आनेसे विशेष कर यदि पहिले दाहिनी
 तरफका टन्मिन्न चौर उपरके बाद बायीं चौर का टन्
 मिन्न पीडित हो, तो लाटुको पहिले १० ११ रोज
 १२ बार देना होता है । इसी तरह त्रिगुण शरीर का
 त्रिमे करानी चर्हि जन्मने ही टन्मिन्नका रोम होकर
 जन्मेका उपक्रम होता है विशेष करके दाहिनी तरफ
 तन्मिन्नमें मन्त्र होनेसे उपरके दाहिने वीराट्टा-
 कार्ड ३० चौर बायी तरफका टन्मिन्न पञ्चनेका
 उपक्रम होनेसे मिलिसिया ३ पापयज्ञ है जैन
 तरह वस्तु देनेके वक्त दाद बोध होनेसे "बेसीडोना
 दिया जाता है उभा तरह कड़ी रोज आनेसे समय
 दाद बोध होनेसे व्याप्टिसिया १५ देना उचित है ।
 कोई वस्तु निमामनेके समय गलेका दाद यदि कानक
 भीतर तक पहुँचे चौर उपरके मन्त्र गलेके भीतर मानो
 हृदय के दृष्टा हुआ ऐसा बोध हो तो लेन्सिदम ६
 ७५ होता है मन्त्रके भीतर मन्त्रोंके पाटको तरह
 बोधा है ऐसा अनुभव होनेसे चौर उपर रोज देहमें

इसके बिना क्रियोजोट एन्टिडूड कुपम-पाम
१२ व्यवहृत होता है ।

साधारण रीतिसे कबरे पोर सामको दवा प्रयोग
करके फलको प्रतीक्षा करना चाहिये । बार बार दवा
बनाना वा बारम्बार प्रयोग दितकर नहीं है ।

गभाशय्यामे काष्ठबहु ।

यस गभाशय्यामे काष्ठबहु विषय रोग उत्पन्न नहीं
गिना जाता । तब इसका हेतुमें भूषकी कमी पेट न
जाना वगैर यन्त्रपादायक उपमत्त जानेसे नीचे लिखे
लक्षणों अनुपायी दो एक दवाकी व्यवस्था करना
चाहिये ।

त्रायोनिया १२ । शैलकाल को पादा
वृद्धता दीव मस्तकमें रक्त सञ्चय ।

नक्ष्मभमिका ३० अ । यथाक बारम्बार
मनद्यान्की कोशिय पर कोठा हाक न होना यह
पुराना कोष्ठशरीर । इसके कई सम्स्फुर ३० अ ।
यथाय क्रमसे सेवन करना चाहिये । इस समय समय
पर ' कलिनसोनिया ६ ' वा फास्टुगोस १ + देकर
फन पादा करते हैं ।

होनेके वक्त पोर भीरके समयमें ठण्डा फल पीना
राम रूप पीना दितकर है । किसी रीति में न

जिन्हीं जीवित रहता है । एकबार गर्भसाव होने पर फिर भी होनेकी विधेय बाधना रहनी है । जिस न होनेमें गर्भसाव हो वह महीना चान्दने विधेय भाव धर्मे से रहना चाहिये । गर्भसावसे विधेय उज्ज्वल दमिदा वा दस्तिका भी साधन नष्ट हो सकता है ।

लक्षण । जैसे मासिक अनुसारक समय पवस्या होती है । वैसी ही दमसावक समय भी ज्ञान्त हुआ करता है । चाय जानने चन्दिना विषयना फिर जलसे वहमदीस रजसाव कटिदय और उदरमें काटन के तरह दमसाव और उत्तरात्तर तकनीक का बटना । चाहे दारु उपस्थित होकर उससे बाध जनसाव और भूत बाहिर होता है ।

कारण । गिरना पावन बादि बाहिरों कारण ज से ज्ञान पर देर पड़ना भारा दस्तु उठाना चमक नान्न बेल दाई पर पटना सामी मद्यवास, मासिक विधेय और गर्भसावकारा रोगबादि विषयने गर्भसाव का मचना है । इसके मिश्रण बहुत दिनोंके बादो मर नसेरिय जोषार विधुविज्ञा रोग, क्वादे लोचन जीभा पचना । रात जायना और भूत कसके बल पडिरान बरत भी इसके कारण हुआ करते हैं ।

विहिता । फिर होश होने देना जरूरी है ।

गर्भावस्थामे भ्रम ।—इच्छुनम एवञ्च
नम नम सफर ।

गर्भावस्थामे न्यावाभोग —पम्परम ।

गर्भावस्थामे प्रदर ।—विश्वस हारङ्गाम
नेनियम बगेर ।

गर्भावस्थामे पक्षाघात ।—एकाम चाम
दी सारको, कम भिविया ।

गर्भावस्थामे रक्तको ज्यादातीमे म्यूनता ।
।घोने माक ।

गर्भावस्थामे मुखमे लन उठना । क्याकडे
।थ वरापसिकाम नम एनम ।

—

नेत्रपदाह । (Ophthalmia)

(आग उठना ।)

निश्चाचन । आखक ऊपर वा बाँपके पन
कक नाचेवानो ऐसिरुभित्तोके म्नाहको नेत्रपदाह वा
मरन बातम आग उठना कहते है ।

कारण घुनिकूटना, पत्थरके कोयले का चूरा

सार्मेनिक ६ । पापमें स्थाय्य भजन और
नीच दृष्टिगोचर मोक्षकी पांछ ।

वैलेडना ६ । पाप नाम दाना नष्टपना
और पुण्या मोक्षकी समर्पितना ।

सार्मेनिक नाइट ६ । पापमें कापड
पहना नष्टकी कोसटपुन नष्टपना ।

इयुफ मिया ६ । जिस भाग वा शत्रु पांछ ।
सब कृत्यागत नष्ट पडना । दान पडनकी भाति
नष्ट मर्होभा । समय समयमें इसका मूल
रिट १५ इन् एक दान जनम मिना कर पापमें
रत्ना जाता ६)

सार्मेनिक ६ । पहने कम फिर कापड
रत्ना दानकी एक नष्ट मर्ह वा पडर कर्मन
रिहा ।

सार्मेनिक ६ । पापमें सुर वैधनकी भाति
रत्नीक दानकी एक कर्म और रातमें लुट
जाता ।

पुगने चाकारका नेत्रपदाह ।

मन्त्रव्य । मर्ह प्रहारकी पोडाम चर्हसा कर ने
वा उममें पदाचार करनेमें यह राम पुराना चाकार
धारण करता ६ । तब निपो दवायोंकी व्यवस्था ६ ।

पाराम हो जाना फिर होना, इसे सेवनमें रुका हुआ कण्टु फिर बाहर होता है ।

सिपिया ३० । हमका बाहिरी प्रयोग करनेका भी उद्देश्य है । समफरके मनहम वा अपश्ववहारके बाद हमसे अच्छा फल होता है । श्लियोंके मर्ज, मन्त्राई वल म्दादे कण्टुदन बढ़ना ।

सलफर ३० । यह प्रधान दवा है । कण्टु, दल और लज्ज । मन्त्राई गरमोमे जितना चुन्साया जाय उतनी ही एक तरहकी पुर्ती और क्रोम बोध हो, जिसका इटई बाद यह प्लान फट जाता और लज्ज भरता है । समडेकी कुरकुराहट और प्लानका उठना दिखता है । इधर उधर मरन केपडो जाना बीच बीचमें गाठ फूटना ।

मक्षिम चिकित्सा ।

सुने प्रहारकी सुझन—माकसम और सलफर एंगारक्रममें हरकत रात्र रात्र बार व्यवस्था करनेमें सत्रही फायदा होता है । उमक बाद ३ बार माथा बाध्यसेत्रि वा हिपार समकर दनेस रोग दूर हो जाता है ।

पोरुदुध समोरो (समडा) में समकर तथा भार , वाप व्यवहारमें लेना होता है । अच्छे बाद यह एष

राम हो जाना फिर होना, इसे धेनुमें बंधा हुआ
कण्डू फिर बाहर होता है ।

सिधिया ३० । इसका बाह्यौ प्रयोग करनेका
तो उद्देश्य है । मनकरके मनहम वा अपघ्नवहारके
रूप इसके अच्छा फल होता है । स्त्रियोंके मर्त्र,
मन्त्रादि वह ल्याद कण्डूजन बढ़ना ।

मन्फर ३० । यह प्रधान दवा है । कण्डू,
जन और जनन । यस्याको गरमोमें जितना सुखसाया
वाय उतनी ही एक तरहकी गर्मी और लग बोध हो,
सुखान्दई बाद वह लान कर जाता और लह
ला है । समझेकी कण्डूराद और खालका लठना
बना है । इसर उधर मरन फण्डो जाना बोध
वम मंड कलक

मक्षिम चिकित्सा ।

सुनि इकारका सुजन - माकमन और मसकर
मोपकमम इरक रंग ६५ बार कवस्था करनेम
इंशका पाएगा जाता है । एक बार दो बार माथा
कण्डूमत्रि वा हिपार मन्कर दनस राम दूर हो
जाता है ।

लेवदुन प्रमोद (खमडा न मसकर तथा पाद
(कण्डू मन्त्रादि मन्त्र जना जाता है । एक माद वह सुध

नक उठा करता है। १० दिनमें ऊपर नहीं रहता
तब इसमें विशेष चत्वाचार होना कठिन उपमा
प्राप्त है।

परिणाम। कइ एक दिनक बादमें ५१ एभाना बा

गोरारम कुछ थोड़ा एक तरह का फलाने जैसा लगता है ।
इसमें थोड़ा धारारम होनेका सामा कोपाना * धार
काई भी अस्वाभाविक लगता नहीं रह जाता ।

रोग निणुत् । पञ्च निखन कारणक वारम
दृष्टि रचना कान - एक निन बोमन पर हा घटनी
बन्ती लख कर समझा लागी ह

चिकित्सादि म कारा उपाय । शमाक
 वरमें ज्य २ शमनी श भा २ भा २ करमा चरित नही
 के । शमा म न कुचन थोर अधिक साग म ही ।
 शराह पहिमा हालत २ उपाय यच्छा २ ।

पछ्यादि । प्यास बभान का बरफ पछ्या नहीं है । पन्थ परिमाणम जगह अन्न वा गरम मस दना जाता है । गरम ननम अन्न प्यास बभती है । अन्न खावू जलपान दूध मिला कर रागोका प्यास को दै । टटकी छोरे पछ्या है । पमार वा वेदाना प्यास देना विशेष हितकर है । उदरामय न रहनेसे

क्रिया थीं ज्ञातहु रोगके साथ कृतचित् धर्म हैं
सकता है ।

चिकित्सादि सङ्कारी उपाय । मेरुकां

उरुष प्रयोग थीर रोगको निश्चय तथा शरीर
स्यामं रचना जागा । ज्यादा सागांकी मोड हा
चनेक तरहकी बात जान करनेमें रोगका उत्पत्ति
सकता है सामान्य उत्पत्ति जानसे ही पुनश्चारी
धारण होना है । निश्चयभाव से अपेक्षा कृत प्रका
होन धर्म रोगका रख दवे ।

दवाकी व्यवस्था ।

रोगके निम्ने नाच निम्नी शरीरका लक्षण अनुप्रा
व्यवृत्त होसकती है — एमिड हाइड्रा एकांश पाकि
एहट्टराभिरा येमाड मिक्कटा कुपम हायमा हा
परिकाम नञ्जम प्यामिप्पारटा खादेकाम इत्यादि ।

एकोन ६ । पाघातादिजनित पीडा शीघ्र
घटकना अहमत्यङ्ग कडा और येमाड होना जर
बगैर ।

एहट्टरा-भिरा ३०३ । शीघ्रनके अह शीघ्र
घटकना पीठको येमाका पायेप अथवा शरीरसे वा
नरा अणु जल पीनेसे पायेप धारण । आभिधाति
पीडा ।

मार्कुन्रियास ६ । पोषका रूढ़ पोताम मज्ज
दुग्ध पोषमात्र मदा इसके मज्ज उपदम (मर मी)
का साथ । मूत्रपयादि फून उठना ।

हिपार सन्फर ६ । सकल पोताम पोष
साथ मज्जमाना धानु बार बार ज्वादे होना ।

पुराने प्रमेह को दवा ।

हाण्ड्राष्टोस ३ । तब्य वा पुराने प्रमेहम
व्यवहार्य है । बहुत दिनसे मज्ज वा पोसे रूढ़ का
साथ इसके लक्षण है ।

नेट्राम १२ । पुराने प्रमेहम पिचकारी मीनेके
बाद यह व्यवहार जाता है । पीले रूढ़ का वा माफ साथ
दरद रहित साथ ।

नाइट्रिक एमिड ६ । प्रमेहके मज्ज यापि
जादि विद्यमान रहना । मूत्रपयस साथ । रक्तवर्ण
वा पोषको तरह साथ ।

पल्मेटिना ६ । प्रमेहसहित वात एकगिरा
यन माना रूढ़ वा पोताम मज्ज रूढ़ का साथ ।

मिपिना १२ । मज्ज दरदरहित साथ साथ
का रूढ़ दूधकी तरह चर्के वा पीले रूढ़ का पिच
हाने देनेके साथ साथ बन्द होकर विप्रगुही वा गुग्गु
मुट्टकी तरह नादिर जाना ।

मार्कुन्यास ६ । पोवका रङ्ग पीताभ मन्त्र
दुग्ध पोवस्वात् मृदा रसके मङ्ग उपदग्ग (गरभी)
का घाव । मूत्रपथादि फल उठना ।

ह्रिपार सन्फर ६ । सफर पीताभ पोव
स्वाव मण्डमाना धानु बार बार म्पाटे होना ।

पुराने प्रमेह को दवा ।

झण्डुष्टोम ३ । तरुण वा पुराने प्रमेहमें
अवहाय्य है । बहुत दिनोंसे पथुर सज वा पोसे रङ्गका
स्वाव रसका लघण है ।

नैट्राम १२ । पुराने प्रमेहमें पिचकारी नीनेके
बाद पथ व्यवहार जाता है । पीने रङ्गका वा साफ स्वाव
दरद रहित स्वाव ।

नाष्टुट्रिक एमिड ६ । प्रमेहके मन्त्र आचि
नादि विद्यमान रहना । मूत्रपथमें घाव । रक्तवर्ण
वा पीवको तरङ्ग स्वाव ।

पल्मेटिना ६ । प्रमेहजनित वात पकयिरा,
धन मादा रङ्ग वा पीताभ सज रङ्गका स्वाव ।

सिपिया १२ । पथुर दरदरहित स्वाव स्वाव
का रङ्ग दूधको तरङ्ग सफे वा पोसे रङ्गकर, पिच
कारी देनेके बाद स्वाव बन्द होकर विनगुडो वा गुग्गु
गुटोकी तरङ्ग बाहिर होना ।

सायक्या रङ्ग रत्नाभ, - ध्याय नामासि एवि
उनाएट ।

दूधको सरङ्ग माटा - क रत्ना पिट्टोसि
इत्यादि ।

पौडको सरङ्ग काल रत्नास इत्यादि ।

पौला रङ्ग काल्य त्यास डिपार नट्टाम,
मायुट्टिक एमिड पत्ता ।

संयुताभ, व्यानाविम माक पत्ता ।

-- --

प्रसन्नतादि । Labour etc ।

प्रसन्न पौडाका मत्तल । जिन प्रसन्न दरम
मत्तल मूमिड जाता है उससे पहिले मित्त उतर
आनेसे कमरका विस्तार कमता है इसके बाद मुचा
माथी उभेजता जिन बार बार पसाव करनेकी चेष्टा
कोर चक्षितता मचन रखा जाता है । चक्षितता
बार बार मम मूत्र त्यागका इच्छा यानिमुससे चय
रक्त कोर उंचाङ्ग पन्नाईका मिहङ्गना पमेर पृथ
मचन दिखारे शिवा करन है ।

जिसे किसीको जण मत्ता पसल मचन उरल्लि
होने है ।

उग्रामो १७ । स्त्राव काना चौर जमाट छमके
मइ परमे नरन ठरन ठहरके नान रक्तमात्र
छायवेष उलजना ।

दुपिकाक ६ । नरन नानवन रक्तमात्र
विश्रमिषा उमन इमका पाल जलन ॥

स्यावाहुना । पनर रक्त नर माला करक
मानरड ममय ममय पर के न नान उमरक बाट
दरन महिन शानिन छ ३ ।

धायना । मउर १७५ । काला चौर जमाट
रक्त माय पर चर नर नान उम नान शानिन माय
का उमन के नम न म माल रक्तमात्र बाट
दरनना ।

फल पडनमे विलम्ब ।

यद्योपयुक्त नरन उमन मम न उमरक बाट फल
पडनमे विलम्ब जाता ॥ नकिन उमन मम धाकर
धाया फल एवा सुधा न कर हमम रक्तमात्र र रक्त
तरन की दुघटना जाती है ।

चिकित्सा ।

हालांकि चारन निगा है कि ~~पुनः~~ ट. ११ वा

मिकेल टेनेसे ही छून पड़ेगा । इसमें फल न पानेसे
क्याचित् बैलाडना वा स्यावाडुना है दना
जाता है ।

प्रसव समय वा प्रसवके अन्तमें आलें ।

(Puerperal convulsions)

प्रसवक दारदक समयमें वा प्रसवक अन्तमें खाद्य
प्रधान धातुका सिर्जाका यह मज्जा हो सकता है । यह
बड़ा कड़ा बाग है प्रसवकालमें यह लघुस्थित होनेसे
मलान और पशुति दोनोंक ही साथ बिनट होनेका
सम्भावना है

चिकित्सा ।

एक न दोस मज्जा बैलाडना कुछसे दायमा आवि
राम है । बाग दसक दृष्टिवा दया है । डाक्टर
कालमें रहता है उनसे वा भिन्दुम भिरिडिक मद्य
कालमें समयमें छल पाया जाता है ।

बैलाडना है । हाथ परमें धुल्ल पर नाना
वस्था । अन्तमें फल नाना दारदक समय आलें ।

कुछन १२ । एसेकदित नमन मुख वा बाग
रदन दृष्ट ५ मुखी तरह टर्नी राजनी ।

व्यामो १२ । खाव काना चौर जमाट उसके मड़ परमें दरद ठहर ठहरके लान रक्तखाव छायावीय उत्तेजना ।

दृषिकाक ६ । सञ्जन भाष्यार्थ रक्तखाव विविधता समन हमका प्रधान लक्षण है ।

स्यावाडना ६ । प्रचुर रक्त लह्न मुख्य कारण जानरेहु समय समय पर काना लान । प्रसवक बाद दरद महित गीणित खाव ।

धायना ६ । भयङ्कर रक्तखाव काना चौर जमाट रक्त हाव पैर चौर भत्र मोभावन तथा गीतन । माघे का समन कानम मां मां गश्द । रक्तखावन बाण दध्यनता ।

फूल पडनेमें विनश्य ।

यथापयुक्त दरद रहनेस समान प्रसवक बाद फूल पडनेमें विनश्य जाता है । लेकिन उसमें प्यदा होकर धात्रो फूल पंथा पंथो न करे इसमें रक्तखाव चौर चनेक तरहकी दुष्टता होती है ।

चिकित्सा ।

हाजार न्यान निया है कि एन्मेटिला वा

मिथेल देनेसे ही फूल पड़ेगा । इससे फल न पड़नेसे
बढ़ावित् बेलाडिना वा स्थाशाडिना ६ देना
जाता है ।

प्रसव समय वा प्रसवके अन्तमें आलेश ।

(Puerperal convulsions)

प्रसवक दरदक समयमें वा प्रसवक अन्तमें आये
प्रधान भाग्यकी म्भियाँका यह मग हो सकता है । यह
बला कड़ा बात है प्रसवकान्तमें यह उपस्थित होना
मलान्दार पक्षी दानोंक ही प्रायः चित्त होनेको
सम्भावना है ।

चिकित्सा ।

१२ न इस मया बेलाडिना कुप्रम जायना आवि
यम - म वग इमकी बटिया दया है । इसमें
इसमें कृत ५ - ५ नम वा भिरिदुम भिरिडिके महार
ममय ममयम कन पाया जाता है ।

बेलाडिना ६ । जाय देरमें खेवम यह अन्तना
पम्पा । मुखम फल उठना दरदके समय जायय ।

कुप्रम १२ । अचेर महित वमन मुख ही करक
रहना दोठ धनुयके सरह टेटी जायामी ।

यनेक तरहकी पोडा रखा जातो है । इस नियो हमरी
मरण अनुयायी विद्विक्ता कोजातो है ।

एकीन है । टहनता पावध करनेमे साथ ।

यमम है । मरना दुधसरन बन चान्द घर
गिरि सारम ना रक वह दूधकी तरह जाना ।

मिर्किल है । चमना दुग्ध चतना साथ
पादल को स व

यजामी है । व व चमर्जित उदरामय घट
मि हाट दलकुल ।

झायामिया १० । साथ बन हाकर माधम
दाट दार म हभी कभी धमाका दना जाना है ।

६ ३३ दलमि योव वन्द ।

७ ९ । दल वजन म दहाव बन्द पादल
नरक

८ १० । दल वमोव दलन ।

९ ११ है । दल दल बन्द दल दल न
नरक

दलान्तामि है । दल दल दल दल दल
नरक । दल दल दल दल ।

नक्षत्रमभिधा ६ । जनन चोर फट्ठानेको
तरुण २२० वीणाव ३० तथा ८५५ का वीणा ।

प्रमथके चन्मर्मे कोष्ठग्रहता । प्रमथके बाद
कुछ रात्रि फाट्ठग्रह रहता विशेष जरुरी है । इसमिती
यह व्यापारिक जाना है । जब आठ दिन दृष्टा ३०
रहनमें मृत्ने उत्पन्न जाने हैं चोर चन्मर्मे तरुण रोग
जासकत है । इसमिती भाव निखो दया दी जाती है ।
स्मिन्मिन्मिती विनकारा २०० बरा नहीं है ।

प्रमथके चन्मर्मे उत्पन्नमथ । पत्तिमेने को जिन्
पट्ठका लोच रहता है । उनको हमी समय उत्पन्नमथ
जया करता है । नु मन्त्रागारमें ज्वाले दो चोर मन्त्राका
ल नम यह जया करता है । भावभाज न जानमें
भरादृष्ट विवि १०० न मन्त्र है ।

दया ।

पलमिष्टिमा ६ । इनका व्यापार प दा मन्त्रा
न मन्त्र है ।

पदादना १० । चन्मर्मे मृत्पन्नमन्त्रिन २०० ।
मथ मन्त्र ६ मन्त्र मन्त्र को चरु मन्त्रा १० मन्त्रिन ।

प्रसवके पन्तमें मन्गज्वर
(Milk Fever)

प्रसङ्ग ३। राज बाट जनम दरद घोर कडा
 जाता है। वनमम खाती उमकनो प्यर जाता घोर
 प्रसङ्ग बाट जनम नष्ट जाता है।

विक्रय। पश्चिम पाणिनी ६ देनेस यह
न्याय नह' दाना एकोनाइठ ६ रसकी पण्यो दवा
६ मादस टाट रहनम बैलाहना वा काया समय
समयस टना होता ६ ।

मन्त्र वा दूधका दन्त्यता । राज प्रसूतोक्त
मन्त्रमन्त्रिना दूध बाहिर हाग उमका शिरता
मन्त्रोक्त मन्त्र राज मन्त्र मन्त्र बाहिर एक मन्त्र दूध
बाहिर मन्त्र मन्त्र दूध दान । विमानशालोको
मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

आ १ दूध कम जान दूध दरमें होने या दूध बैठ
आमोंसे दवा करना चाहिये ।

दया ।

पलम् ६ । दूध चिल्लवमे होना वा बहना
बेउ जानेमे दूध दगा हो तौन माया देना होना ६ ।

व्यान्त्रिकरिया ३ । यसाजान गान वर
को पोडा स्तनको पुनता गनान क ज न हानम
इसको दना होता ८ ।

भय हेतुसे दूध रुकनम - एकांन । क ४
जनित - व्यामा १० । गात्र जनित दुग्ग ४ ।

डाक्टर इत्येन कहत ह—एमाफिटिडा भी उमना
दया है ।

पतिरिक्त स्तन्यक्षरण ।

(प्याले २१ हाना)

किसी किसी प्रशुताक स्तनन रतना प्याले दूध पैदा
होता है कि इसमें वम न कनाय जाती है । पञ्चान
कारीमें दूध भरनेमें स्तन भगा रहत है ।

पतिरिक्त स्तन भरनग शारीरिक और मानसिक
पनिष्ट होनेकी सम्भावना रहती है ।

दया ।

पसाड दूध भरना,—येनाड व्यान्त्रिकरिया
त्रायोनिया समय समयमें धायना वा पनमटिना ६ ।

स्तन्य घर्ग जनित स्वास्याभद्र, दुर्घ
नता, क्षुधामान्दा, रातके यक्तमें पमीना,—
व्यान्त्रिकरिया, धायना सन्दर ६

जैनैर्दरद शाय कोपमं नरत् पीर मायमं नरद
मनेरिया चवमं पुरान प्रोदाको यद वृत्तिरा नृवा ह ।

ब्राह्मोनिद्या १२ । प्रोदा म्यानम सुं वधनको
तरह तक्रनोफ मडित काठवृत्ता वा चतिमार, —रथ
वमन । प्रोदाको पावनत भिक्षोपदा न दरत् पीर
फूलता ।

मनुस्कर ३ । प्रोदा फुलता कडा पीर दोइने
म दरत् प्रोदामं सुं वधनको नरह तक्रनोफ वात
कहने चनन फिरनमं उहि पुराना वामारो ।

मियानोयम् चमरिक्षेनम् १ x । पुराने
चेचमं प्रोदाको कठिनता फूलता पार ल्याः कनकता
कट मचनमे प्रयोग करनम विमय कन वाया जाता है ।
रक्षाचला चहवि वा चतिमार विद्यमानमं यद क्वा
देनमं पुराई जानका मन्धावना ॥

वधिरता या कानसं कम सुनना ।

(Deafness)

कानमं प्रत्याह कानमि पीव मित्रमा वतर शममं
परिधाम, क्वाः ठक्का जमई कर्ता कर्ता वा मरना
प्रवने गृह सुननेमं दन राज देना कर्ता है । य न क

छाद्य विह्वलित वा पात्रति मृत पात्रपद विह्वलित वमर
 घनस्य कारक है सामान्य पात्रकारके मर्म रंग दश
 म्पदके पाराम होने देखे जाने हैं ।

•

चिह्निका

दुबलता वा छाद्यविह्वलित विह्वलित हेतु —

पद्मपद १३ ।

हिम वा राडा लगनाप्रवृत्ति, — एहीन

मात्र एवम

रामन्वरीके वाद — पद्मपद १३

विहारन्वरीके वाद — पद्मपद १३

म लज्जित व द नक्षि वाद — पद्मपद १३ ।

गाडाम बटनस वधरता कम लज्जित
 हैं, — पद्मपद १३

कानम ताजा लगना — म क वा पद्मपद ।

मुनेन वदन्, — पद्मपद नक्षि वाद सामान्य

कानमे ३ ३ ३६ देवद विह्वल पात्रपद कान ३ ।

रोम हृदय मध्य धार गनेमें गुटिका नवी आती है ।
 कर्मम धार शरीरमें आ न होना ॥ गुटिकाएँ पहिले
 बाधन कड़ा दौर मूद पदकी तरत मुखवीना होकर
 उठते हैं — कर्मम उक्त गुटिका चारों ओरमें क्वचो
 जाती हैर उक्त रम कवय जाता ॥ धीर मध्यमन
 मदी रहता ॥ हृदय का मातृ दिन वह मर रम
 पौरुष पवित्र जाता ॥ धार बाधका नीचा खान उ था
 होना ॥

पानी वसन्त में धीर दृष्टा वसन्तमें
 प्रभेद । पत्रवदन दौर दृष्टा वसन्तकी गुटिका
 पनेक समय एक तरतकी जाने पर भी रममें प्रभेद है ।
 वसन्तकी गुटिकाक बीच वसन्तधरके समय निघता
 रहती है उक्तवसन्त एक नही रहती वसन्तकी गुटि
 काधीका पहिले पानम टबानम उक्त मरसोका
 तरत कड़ा वलुका पानत पनभर जाता है पन
 वसन्तमें वह नही जाता । वसन्तका गुटिकाधीके एक
 धार दौर निघन ॥ मूधन पर दाग रहता है उक्त
 वसन्तमें वीमा दाग नहीं रहता ।

कदुक्त वसन्त जानेम ऊपर तिष्ठ नदरकी एक
 रता देखी जाती है । धरता ल्हाटे हनाप रोल्ड
 शरीरमें दुग्ध पन्थि धार ल्हाटे होकर पदौर तर
 की सजता है ।

बाल बालिका । Bulbo

निम्न चित्र 'नरक' के एक दृश्य का कृतक
दृश्य है। इसमें एक बालक और एक बालिका
हैं जो एक-दूसरे के साथ खेल रहे हैं।

बालक और बालिका दोनों बाल
मन में हैं। बालक बालिका के नाम से
उपलब्ध है। बालिका बालक के नाम से
उपलब्ध है। बालक बालिका के नाम से
उपलब्ध है।

बाल बालिका के उदाहरण । बाल बालिका
के उदाहरण के लिए बाल बालिका के
उदाहरण के लिए बाल बालिका के
उदाहरण के लिए बाल बालिका के
उदाहरण के लिए बाल बालिका के
उदाहरण के लिए बाल बालिका के
उदाहरण के लिए बाल बालिका के

बाल बालिका के व्यवहार ।

बाल बालिका के व्यवहार के लिए बाल बालिका
के व्यवहार के लिए बाल बालिका के व्यवहार के लिए

बाल बालिका के व्यवहार के लिए बाल बालिका
के व्यवहार के लिए बाल बालिका के व्यवहार के लिए
बाल बालिका के व्यवहार के लिए बाल बालिका के व्यवहार के लिए

यह अगहमें दूसरी जगह दरद रह जाता है । शिपों को छोटा पगराहमें रहि ।

रसटक्म ६ । घोटित ध्यान कडा होना बिनामचे ममय दरदका रहना कमामन दिग्ने होसने में रहस्य ।

कल्पचिकाम ६ । रसटक्मचे बाद यह धार बिना जाना है । पियावहो कमो धी सिचनाना होत ।

पुशातन वातको दवा ।

रसटक्म ३० । घोटित ध्यान कडा दोर दानद हमर काने दुखनना ।

मन्फर ३०३ । पुशातन वात कोनिच दवा । ममाने पुत्रनादर हमर दवा ।

कष्टिकाम ३०३ । दाध ममानक ताव उठा न कर ममानक कटारना मरममें दवा रहना ।

कल्पचिकाम १६ । रसटक्म कादना न जाने में हममें दवा काय होता है ।

पुशातनैरिदा ३०३ । अग्ने धडा होकर काय बरामे बन । कथिनेद वरवट हम दोर होमो ए र'म दगुर दमना ।

नित्य है । अतएव चतुर्मुख ज्ञाया याज्ञिका वा हम निश्चिन्ता मानिग करना वही नहीं है ।

हीन पुरातन भाष्यज्ञ ज्ञानमें उपाधधान श्रमों
करना और सत्यता कानिज वा गरम वल चोटना
होता इति ३ । पुष्टिकर और लज्जाक भाजन
रिना वाहिय ।

तत्तुल्य शालको दृष्टा ।

एकौन ४ । प्रवचनर निश्चिन्ता श्रम
रातमें समस्त श्रम निश्चिन्ता करना और मानव
योगे लज्जाक शालको उचित व लज्जाक वल दृष्टा है

धैर्यात् ५ । मायमें १५ १ ५ मध्यमत्रयान
सज्जित । याज्ञिक निश्चिन्ता सत्यता मान ज्ञान ।

मायोनिद्या ६ । सृष्टि चयनको तरह दृष्ट
मानवयोगे दृष्ट चरित्रज्ञान निश्चिन्ता करना चिन्त
चैत्रिज श्रमका चट्टना , भेदिक दृष्टम चिन्तमें वाह्य
होता । अतः मायोनिद्या दृष्ट चरित्रज्ञान चयने ना जाता ।

मायुमल ७ । प्रभिलन याज्ञिक ज्ञान प्रव
चने ना चैत्रिज मो चैत्रिका चयनमें ना जाता । श्रम
दृष्टका चट्टना । अतः मायोनिद्या ।

प्रवर्तितिका १० । अद्वैतज्ञान श्रम चयन

एक प्रगटमे दूसरो प्रगट दरद हट पाता है । छिटे
का पीडा परराष्ट्रमें हटि ।

रसटक्म ६ । पंडित खान बडा ईश्वर
विशामके समय दरदका बटना समान छिटने टुकने
से उदयम ।

कलचिकाम ६ । रसटक्के बट्ट दू दू
हार दिया जाता है । देखाबडो कमी ई छिटे
वारे ।

पुगतन बातको टश ।

रसटक्म ३० । पंडित बट्ट दू दू
बाइट इसक बट्टमें दुखता ।

मसफर २०३ । इराज दू बट्टमें
मजानम बुजनाबट्ट समेह दोद ।

कटिकाम ३०३ । बट्ट मजानम
म बट्ट मजानमको बट्टोरम् ।

कलचिकाम १२ । बट्ट मजानम
म इससे बट्टा कार्य होता है ।

बगलचेरिया २०३ । बट्ट मजानम इसको
कार्य बट्टम बन । बट्ट मजानम
बट्टमें बट्टर समेह ।

मजानम

मजानम

उपद्रव पारिकी विकृति प्रमेहरोग,—

बार्ब भेञ्जि नाइकोप रुमफ दिगार ।

मेह पीडाजनित,—क्रिमेटिस गुप्ता भाकु ।

उद्वतासै उपग्रम,—रुटस्य इहिकाम
नाइकोप माफ रुमकर ।

ठण्डा प्रयोगमे उपग्रम,—पन्मेटिना ।

ब्रण तथा स्फोटक ।

(Boils and Abscesses)

लक्ष्य । छोटे छोटे स्फोटकका ब्रण रोग बड़े होनेसे स्फोटक कहते हैं । रोग तन्मू का यन्त्रण पेश देना जानेंगे उसे जिन्हि कहा जाता है । पहिले पन्हा पारकता होकर दाता वह बैठ जाता पयवा पीव हाकर मुख जाता है । कभी पापही पाप फटकर पीव बाहिर जा जाता है । कभी चाकूमे मुख खर देना होता है ।

कारण । खोर कहते हैं ये मछड़े होयमे पैदा होने हैं । छोरो, पोचकारने पासके समय इनकी उत्पत्ति न्दादे देखी जाती है ।

चिकित्सा । पहिले नासु होशानेसे योनिस दम की पडे रोर पशने का उपग्रम होनेसे पुलटिस देना

उपद्रव पारिषो विकृति प्रमहोरोग. —

साध्य है, जि. माहकीय रूप से दिया है ।

मैत्र पीडाजनित - हिमेटिस पुष्प माकु ।

ਤੁਧੁਤਾਨੀ ਤੁਪਾਨ, — ਰਸਟਰ ਕਹਿਕਾਸ
 ਸਾਹਿਬ ਸਾਹਿਬ ਸਕਰ।

ਠਾਡਾ। ਸ਼ਧੀਯਸੇ ਤਦਸਮ, — ਚਮਸਟਿਯਾ ।

इष तथा स्फोटय ।

(Boils and Abscesses)

[illegible]

व्यास । कीर कहते हैं कि भद्रके दोषम रहा
 चले हैं । मोक्ष, साधक के समक्ष समस्त दुःखों
 दार्शनिक काट देते जानते हैं ।

विहिता । दहिसे नान होइये । होइये नान
 होइये होइये नान नान नान नान नान नान नान नान नान

दुग्ध पीव होने पर इसे देनेसे नासूर कम चाराम हो जाता है ।

मनुस्मृत ३० । बारम्बार ब्रध वा स्फोटक होना शरीरके अधिगता दाघ समाधनके निष्ठि शेष घेचमे ३। मादा देनेसे उचित है ।

दौड़नबाधमें मुखमें ब्रध होनेसे क्षतुपचवानाको मावधान होना उचित है । घनेक समय इन्द्रिय दाघमे ये ब्रध मुखमें होके मुखकी ओर पिगाह देते हैं । इससे निष्ठि काष्ठमेनि १२ क्वालिग्रोम ३× फस्वरिक पमिड ३० अगर इटिया दवा है । क्वालिग्रोमके सहार भी फल पाया जाता है ।

सघिप्त चिकित्सा ।

अधिक ब्रध होते रहनेसे —वायिका नक्ष मनकर ।

ब्रध होनेको प्रवणता वा स्वभाव होनेसे,—
वायिका, लारकीय मनकर (उषक्रम) ।

बड़ा फोड़ा होनेसे,—द्विषार छोटेसस भार काय सारसि ।

मस्तककी छपर फोड़ा,—क्यामके नारदिक पमिड वमैर ।

मनकधूर्जन (मायेका घूमना) ।

(Vertigo)

सबसे मिये माया घूम जाना (सिमें नहर जाता) के समो समझता है कि यह में दिङ्गल दोर बाहिर वलुगे घूमना इह बोध होती है । विविध दोडा न नहरद्वारे यह प्रकाश होता है ।

कारण । बाँवको पीड़ा कानके भ्रमराजो पीडा पाकायद्विज दोर बावविज विरुति तथा बुढापात्रमिज दोडा नहर बावविज इत्येव सङ्ग दोर भूमद्विजका पीडामें भे यह प्रकाश होता है । मस्तिष्क पीडाके बाद दोर मय कुटनाइल दोडा बनेर विरज करमिज ५ यह प्रकाश हो बहना है ।

विधिम्ना ।

मस्तिष्कमे रक्षाधिरुपश्रुति रोगने,—

रोगने ६ वा रोगद्वारा ६ मस्तिष्कमे ६ बुढाविज समय ६ बरहुन दूरा कराना है ।

परिणाम विरुतिप्रति रोगने,—मस्तिष्क समय १ ।

अधिक रोग रक्त निरुपनेसे, दुर्बलता-प्रति रोगने,—बादल समय ।

उत्पन्न होगा है। एक समयमें एक वा कर्त लगाने परित्याग होगा है।

कारण । एक तरह के जोड़ा हुआ डिग्रायाहिकार के समझे उत्पत्ति होती है। अपरिष्कार स्थान अत्यल्प मात्रा में मात्र इससे उत्पन्न होता है।

निदान । सुमनेमें समझना होनेसे मस्तिष्क
गतिमान चक्षिमण्डल समैर आकाश होते है ।
मस्तिष्कके दूसरे पदार्थ समैर को विज्ञप्ति प्राप्तिका
दोष (Blood clotting) हड्डीमें दर्दको प्रकट
चक्षिमण्डलकी आकाशिता पैदा होती है । आशियान
क्रियाका प्रभावित पैदा होता है ।

प्रकार भेद । रोगजनक एक होनेसे भी यह कर एक प्रकारसे विभक्त किया जाना है — (१) एरोनिक (यस्य हृदि यक्ष) । (२) यस्य पितृहि गृह्य (सिपटि मिनिह लामोनिह या इन्टिष्टेनाम नेमाराटोय सौर सेरिवाय) ।

नक्षत्र । यहिने महमा शीत करके पदम फिर
 छोटा छोड़ लव जेब नाव नाडी इत चौधमाने दौर
 कण्ठबहुत । मीम पछासको मभैरवा महो रहती
 दीत दौर एन एनइने पवन ऐठन वा मरोड । छाव
 मण्डनकी विबुधलता । पनाप, मन्दादुता बगल वा

कुष्ठजीर्ण यन्त्रिणी का कुनना । स्थूल विमोचने अति
गार रक्षातिमार भीद यमन । कुम्भकुम्भ प्रदाह यगैर ।

व्यूहानिक प्रकारकी पीडामें कुवको यगन
जनमिनको यन्त्रिम दरद चोर जनन रहतो है । पहिले
कुनना जरा नही रहता, सेजिन दरदको जननम
रागो यन्त्रिर होता है ।

न्यूमानिक प्रकारका यमन कुम्भकुम्भ प्रदाहकी
भाति मधन प्रकाश होने हैं ।

मेरिन्नान प्रकारका होनेसे मन्त्रिक ध्वरक
महय मधन ज्ञान दृष्टा करता है ।

पौष्टिक प्रकार का होनेसे पहिलेमे जो
उत्तरमें ज्ञान यमन पेठ कुनना यगैर मधन दम्ब
जाति है ।

म्यायित्व । मधनधर एकसे चारि दिन
प्रकार मन्त्रे मन्त्रित् ज्ञादे दिन दृष्टा करता है ।

भाविजम् । प्राय माहानिक कम प्रमाण
करता है । म्यूहानिकको यपचा न्यूमानिक माहानि
तिक है ।

प्रतिषेधक उपाय । ज्ञानका कम मूर्ध
दिरन परिष्कार परिष्कृतता, विद्वद् वायु मन्त्र

व्यापटमिया १ x । धरम ग्रन्थ दुगम
तिमार धरमग्र प्रभाव तन्मात्रता मरीरम दरद ।

कम्पन ६ । अमानिक प्रहारमे कुमकमका
गकमन ।

पाइराजिनम । मन्नाग ग्रहि विद्यात ग्रह ।
धममे ताप ग्रह कस ग्रहा ग्रहा है । डाकर मन्ना
धममे धनेज मन्नामे पाया है ।

धर्मनिक ६ । धरम ग्रन्थ धरमता धाम,
धरमताधका धरमताध ग्रहा मन्नामे मन्ना
धाम धरम ग्रन्थ धरमताध धरमताध धरमताध है

मेमिन २० । धरमताध धरमताध है । डाकर
धरमताध है — धरमताध धरमताध धरमताध
धरमताध धरमताध धरमताध है

क्रोटनम धरमताध धरमताध ६ । डाकर मन्ना
धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध है ।
धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध है । धरमताध धरमताध
धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध
धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध

मेमिन धरमताध ६ । धरमताध धरमताध
धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध धरमताध

है । पथुर पसोना निक्कनना चौर ग्रासाजरोध लक्ष
इसमें ल्याटे । डाक्टर खानि इसके पचपातो है ।

रसटवने ह । पथर खर कम्पाहमें टरद ।
उनाप ममिका पथिका पदाह उदरामय तन्नातुना
मचर रहता है । डाक्टर मजुमदार इसके पचपातो है ।

रनः मिशय माकुहर धाडियागा कायमेजि
नैडाम वगैर समय समयमें उपदोनी होते हैं ।

क्रम । इस रोगमें निच क्रमके सहारे कम पाया
रहा है ।

माथेका टरद (शिरपीडा) ।

(Headache)

विविध लक्षण चौर पुराने रोगोंमें शिरपीडा मचरा
विद्यमान रहता है । इस स्थिति यह अतन्त्र रोग नहीं
बना जाता ।

कारण । नीचे मिले कारणोंमें शिरपीडा हुआ
जाती है ।

(क) रज्जान्ता जात कथमूह मैलेरिया उपदम
मूत्रधारजनित पीडा ।

(ख) शीघ्र हरा तमाकुछे विरहिदाजनित
पीडा ।

पीना वगैर हेतुमें इस पोड़ाको उत्पत्ति होती है ।
पाघातादि पटना वा चल्बल परिव्रमसे भी पीड़ा
इषा करती है ।

घ्रायुको दौर्बल्यजनित पोड़ा । रक्ता
क्षतावयवोंमें वा मूच्छागत वायुरोगसे इसी तरह की गिर
पोड़ा देखी जाती है ।

यान्त्रिक गिरपोड़ा । मस्तिष्कमें चर्बुन,
मस्तिष्क सदाह वगैर कारणसे यह होती है ।

एककपालमें मायका दरद (माइयण) ।
इसमें मस्तकके एक तरफ सामयिक और वमनोद्देज
वा वमन समुल्ल दरद होता है ।

चिकित्सादि सहकारी उपाय । सब तरह
की उत्तेजना पद्धतियाँ चाहागदि विषयमें भारधान
सह और मांस त्याग करना उचित है । अधिक तैलाक्त
वा गुह्यक्त वस्तुएं भोजन करना मना है ।

ज्वर न रहनेसे ठण्डे जलसे नहाना और परिमित
आयाम विशेष हितकर है ।

पञ्चजनित गिरपोड़ामें नमक वा सोरा या हर
वमन करनेसे जलद पोड़ा की मानि होती है । घात
त्रिक कारणसे रोग होनेसे स्थिरभावसे होना अच्छा
है । शिरका कम घूँटी हरके बटाना, शिरमें घीतन

महारे पाददा न हरे पर-बालीनि १० डाहुर
हेन्ने निरेट्टान एनवान के धन दाया है । ११
सेवमे मनदर १० विदिगा १० समय समय पर पाददा
धन दाया करता है ।

वात वा धानवात अनित गिर पोडमै ।

नाथमन का दण्डदण्ड नमन समय दण्डने दण्ड
सेविका सेव कुनेमिदके कदागे दण्ड दण्ड दण्ड
दण्ड है ।

तब मानिम करना अच्छी कड़ीमे धीरे धीरे केश भाड़ना
 घुना नहीं है । सरसत वा मिमरीका जल अच्छा है ।

भायेके दरद का दवा ।

(डाकर ल्वारकी राय ।)

शिरपोडा । मर्दी बन्द बीजर मनुष्य
 का बोध होना उसके मूत्र नाक बन्द बोध
 । ६ । पाखर ऊपर फटनेकी

बन्द नाकम नाक घुला पड़ती रहनेके समय —

१२ । मर्दी चरीचजनित शिरपोडामें एकीन

का घेलाड ६ अच्छा दवा है ।

रक्ताधिक्यजनित शिरपोडा । ज्यादा पेशाब

दरद, नीच मुख नाक बगर लचलच एकीन और
 घेलेडना, समय समय पर दवाया वा नखम की जरूरत
 होती है ।

पाकाशयिक शिरपोडा । बमनोत्तेज लचल

बहित शिरपोडामें दुपिकाक ६ व थारथ खरक
 घमम वा एष्टिकुड दे कर कम पाया है ।

मध्य पानजनित पोडामें काष्ठीभेलि वा नकम
 भमिका ३० ग । खोहबस्ता रहनेसे नखभमिका

मायेका दर दहिनी तरफ च्याटे रोमनी पोर दण्ड
पसल माया मलम पैर ठप्पा दरदका पावेन सहसा
पाना पोर सहसा जाना । दिन घटनेके सत्र छत्र
हहि ।

वाशेनोया ३०३ । कसुप बगवने सगाय
पैरेकी तरफ मिरपोडाका दिखार, चमनेसे हहि
मायेके दरदके पाय नाकसे छत्र निरमा पसेनाके
समय सहसा छान करनेसे मिरपोडाकी उत्पत्ति ।
पाशादिक कामवानिक बा रक्षाधिन्यजनित पीडाने
अवहाय है । पाये बगवने मिरपोडाके सहित
हमनोट्रेक ।

वायना १२ । राम रत्नछावजनित रक्षा
मना राम की मिरपोडा मलमने दण्ड दण्ड करके दरद
मलमने पावान मातिकी तरफ दरद पतिरिक्त
दण्ड परिसासन बा छत्रिम मेदुनक परिसामने
मिरपोडा ।

खेनुस ३०३ । पाषण्डयानी मायेका दरद
पवात मलमने मिरपोडा पाषण्ड काके कसुप तरफ
काके नैव पदम पाषाण जाना, माया धरना
मानो रोमो कुछ मौ नहो देखने पाता है । पानने
दण्ड ।

शारीरिक परिश्रम, — व्यायामके, कम त्याग

मिम ।

ठण्डाजनित, — एकोन वेनाड वायो बगेर ।

सस्तकमें आघात, — पाचिका रक्तकष मार

क्यूटा ।

मानसिक आवेग, — कामो, लेशर इमें

सिया ।

रात्रि लागरण — वाया नक्षत्र चलकर ।

समय ।

सन्ध्याकालमें दरद — एनम चलकर ।

रात्रिकालमें — बलाह पलस त्यागसिम ।

प्रात कालमें — वायो वायना नक्ष चलकर ।

दवाका लक्षण ।

एकोनाइट ६ । रक्षाधिक्यजनित गिरघोडा

जखनयुक्त माधिका दरद, मानो मस्तिष्क उच्च जलस
पान्दोलित होता है । रोगनी और मध्दसे हडि
अन्धकारमें स्थिरभावसे सोनेपर उपग्रम ।

बिलाडुना ३० । सस्तकमें रक्तपधावन उसके
महित सन्धास रोग होनेका उपक्रम दण दण करके

माधेका दरद दान्निनी तरफ आदे रीयनी पीर म्
पमद माया गरम पैर ठण्ठा दरदका आवेम सदसा
पाना पीर सदसा खाना । दिन बदनेके म्द म्द
हदि ।

ब्रायोनीया ३०३ । समुष कपानसे समाय
पीकेकी तरफ मिरपोडाका बिस्तार बननेके हदि
माधेके दरदके माय नाकसे लह गिरना यमोनाके
समय सदसा खान करजेसे मिरपोडाको उत्पत्ति ।
पाकायदिक आमशक्तिइ वा रक्षाधिकजनित पीडामें
अवधार्य है । आधे कयासमें मिरपोडाके महित
रसनोदेख ।

चायना १२ । रम रज्जुसावजनित रक्षा
पता रोग को मिरपोडा मस्तकमें दप दप करके दरद
मस्तिष्कमें आवाज शक्तिवा तरफ दरद अतिरिक्त
इन्द्रिय परिचालन वा ह्विम मैथुनइ परिचामने
मिरपोडा ।

जेसस ३ ३ । कथकगतो माधेका दरद
पषाम् मस्तकमें मिरपोडा आरम्भ करके समुष तरफ
आके नेत्र पदरत आवाज होना, माया घरना
मानी रोगी कुछ भी नहीं देखने पाता है । खानमें
म्द ।

[illegible]

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥

447 11 1 41 117 411 1 11 + 1 11 11 1

[illegible]

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

444

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

[illegible][illegible]

इति च। अथ च।

[illegible]

ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਨੇ ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਰੱਖ ਦਿੱਤਾ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਰੱਖ ਦਿੱਤਾ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਸਿੱਖਾਂ ਨੂੰ ਆਪਣੇ ਆਪਣੇ ਖੇਤਰਾਂ ਵਿੱਚ ਰੱਖ ਦਿੱਤਾ।

[illegible]

● 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

माथेका दरद दाहिनी तरफ प्यादे , रोगनी धीरे गन्ध
पमस माथा गरम धीरे ठण्डा, दरदका धावेन सहसा
पाना धीरे सहसा जाना । दिन घटनेके सङ्ग सङ्ग
हृदि ।

त्रायोनोया ३ श । अशुच कपालसे लगाय
पीछेकी तरफ गिरपीडाका विस्तार बमनेसे हृदि
माथेके दरदके साथ नाकसे सङ्ग गिरना पसोनाके
समय सहसा खान करनेसे गिरपीडाको उत्पत्ति ।
पाकामयिक पामशतिक वा रक्षाधिव्यजनित पीडामें
व्यवहार्य है । पाथे कपालमें गिरपीडाके महित
बमनीदेक ।

चाथना १२ । रस रक्तसादनित रक्षा
न्यता रोग को गिरपीडा मस्तकमें दप दप करके दरद
मक्षिष्कमें पाघाल प्राप्तिको तरह दरद पतिरिक्त
इन्द्रिय परिपासन वा कृत्रिम मैथुनके परिपाममें
गिरपीडा ।

जेनम ३.३ । पाथकपाली माथेका दरद
पदात् मस्तकमें गिरपीडा पारथ करके सुखध तरफ
पाथे नेत्र पथ्यमा पाकाम होना, माथा धरना
मानो रोगी कुछ भी नहीं देखने पाता है । जानमें
गन्ध ।

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

୧୫୩

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା, ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା, ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

୧୫୪

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

୧୫୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

ଶିଳ୍ପୀବିଦ୍ୟା ପ୍ରାଚୀନା ଶା ୩୧ ୧୫

मस्तिष्कमें मानो कांटा बोधे देता है, मानो मस्तिष्क
छट खाएगा ऐसा बोध मस्तिष्कमें थोटा मग्नेसी
तरह तरह सधरे चूठनेमें ल्याने भोजनके चक्करमें
बटमा बाहर जाने वा चक्कर होने वा जेब सञ्चालनमें
हृदि । बाहरहता चक्कर मैथिलहारियोंकी धिरपोडा ।

प्लूमेटिला ३०३ । जगद्वृक्ष छादयिषु दोर
वासवान दा पादामयिषु दिरगोडा । मयुष कल्पमम
दोर निरुह कजुर दारद मय्याडे ममउ हहि निम
एमवाइ विरुह मया काय नम पापमम दारद वट काय
हहि । य दुमि वा पापमम वरुह वापनेध मय्या रडे ।

मिथिला ००३ । आधुनिक और दार्शनिक
विचारों पर एक नया दृष्टिकोण ।
आज के दार्शनिक विचारों । विचारों की
वृद्धि । आधुनिक विचारों ।

म्याङ्गलिया २०५ । १३ मरिच कान्हा
 दारु दारु कान्हा निज कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा ।
 म्याङ्गलिया २०५ । १३ मरिच कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा ।
 म्याङ्गलिया २०५ । १३ मरिच कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा कान्हा ।

मन्त्र १०३ । मन्त्र १०३ मन्त्र १०३ मन्त्र १०३
 मन्त्र १०३ मन्त्र १०३ मन्त्र १०३ मन्त्र १०३
 मन्त्र १०३ मन्त्र १०३ मन्त्र १०३ मन्त्र १०३

रत्ननयन इ । मन्दपुष्प मस्तकमे भयानक गुह्य
वा । रत्नाभिराभिनव गिरगोदा घोषज्ञानमे साथ
का ॥१८॥ गुरु द्रोक्ष विजगुण घोष ममय तज रचना
थी । गुरुक वतापुत्र मद्रु कर्ता ।

दुष्प्रमिया ३० । जिजिहसा वा गुह्य वायुज
घोर घातविज गिरगोदा नक्षत्र वा नाकके मूलमे
॥१९॥ ज्ञानो गुरु कपोलमे मार्गिका दरद यमनी
॥२०॥ मन्द इ मस्तकमे गिरा दरद कि रोगो कवच घोड
३ । नाक मस्तक चयनत कर्ता है ।

घातुर्गम इ । मानसिक परिश्रम भक्ति
म भक्ति गिरगोदा उभय मद्रु विजगुण मय घटमे
॥२१॥

न्याकमिम ३० ग । यय भक्ति ज्ञानको गिर
गोदा भक्ति गिरगोदा कपोल मद्रु कवच । ३०
मस्तक गिरगोदा ॥२२॥

मद्रुमस्तु ३० । लयक मद्रुमस्तु गिरगो
दा मस्तक गिरगोदा कपोल कवच मस्तक
मस्तक भक्ति गिरगोदा मद्रु त रमे क ॥ २३॥

नक्षत्र मस्तु ३० ग । रत्नाभिराघोर घातः
मद्रु गिरगोदा मद्रु कवच मस्तक ॥ २४॥

मस्तिष्कमेव मानो वाटा बोधे देना है मानो ज्ञानो
 फट छादना ऐसा बोध मस्तिष्कमेव होवे मानो
 तरङ्ग दरद, गहरे बुझनेमें लदावे मानो
 बटना बाहिर आने वा पवनत होवे एव ज्ञानो
 हवि । बाह्यबटना इत्यमरमुनिरादिहोवे मानो

पञ्चमेटिका ३०३ । बाह्यदृष्टि

बाह्यदृष्टि वा पाशमविष्ट दित्तम् अत्र
 दोर नेत्रके छतर दार मन्त्रके अन्तर्गत
 पाशविष्ट दित्तम् अत्र अत्र अत्र अत्र
 बाह्यदृष्टि वा दृष्टि वा मानो देवे दृष्टि

मिथिग ३०४ । अन्तर्गत

दित्तम् अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र
 अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र
 अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र

म्यादुष्टेयिका ३०५ - - - - -

४५

दरद दृष्ट बाह्य दित्तम् अत्र
 बाह्य दृष्ट वा दृष्ट अत्र अत्र अत्र
 दित्तम् अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र

मन्त्रोक्त ३०६ अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र

मन्त्रोक्तमेव अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र
 मन्त्रोक्तमेव अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र अत्र

शालग्रामित शिरपीड़ा । सवेरेसे गुरु होकर दिन चढ़ने
 के मध्य हो मध्य पंचमा बढ़ना रातमें भी दण्ड दण्ड करके
 ८१८, सामयिक दण्ड ।

मलमे गाव । (Aphthæ)

गुण्डा में भोजनमें जीभमें शालग्रामित गावमें सादे सादे
 चान दूधा करके । सामान्य प्रकारको पक्षाघात ।
 अक्षरारमें लम्बा नगले चौर पक्ष गुरु होवेमें दूधको
 लथाल दूधा करके ।

गण्डव ध

दवा ।

नक्सभमिका ६ । मसूदे का फूँटना, दरद मुषमें एवम निकलना छोड़वइ नारखाय ।

मार्कुगियास ६ । मुषमें नार मिरना पेटकी बामारो टल्खदुख छावमें चच्छा दात हिलना बिह्वा म्बोत धोर कडापन वगर सुषमें दिया जाता है ।

एमिड नाइट्रिक ६ । मुषमें घाव मसूडा मसूदे धोर घूना हुआ तथा उससे सड़ गिरना मुषमें दुल्ख पारकी बिजति रहमी ।

काज्जि भेजि १२ । मग धार चच्छा दोष पार की बिजति । पार्सेनिकसे पायदा न होमेसे इससे फल पाया जाता है ।

पार्सेनिक १२ । मुषमें काज्जि होना उन्ना मग चच्छा दुखनना । जोमके जिमारके धार छावमें बहुत बनन होमी ।

सल्फर ३ । यदि किसी दवासे पायदा होकर धोर कम न हो वा देहमें सुत्रली चसडाका दोष रहें तो बीधने इसकी एक मात्रा देनेसे विषेय पायदा दीयता है ।

योराक्स ६ । वातक धोर बढोके देहा मुष

୧୧୧ ଗାଳ୍ପିକ ଶିଳ୍ପ ଶିଳ୍ପୀ ଶିଳ୍ପୀ ଶିଳ୍ପୀ ଶିଳ୍ପୀ ଶିଳ୍ପୀ
 ୧୧୨ ଶିଳ୍ପିଗଣ ଶିଳ୍ପୀ ଶିଳ୍ପୀ ଶିଳ୍ପୀ ଶିଳ୍ପୀ ଶିଳ୍ପୀ

ଉତ୍କଳ ଗାଳ୍ପ : Aph'ha)

दवा ।

नक्सभमिका ६ । मसूड़े का फूटना दरद,
मुँहमें गन्ध निकलना कोठवह सारसाय ।

मार्कुरियास ६ । मुखमें भार गिरना पटकी
बामारी दुग्धमुह घावमें चप्पा दात हिलना निह्वा
स्थीत घोर कडापन वगैर ससपमें दिया जाता है ।

एसिड नाइट्रिक ६ । मुँहमें घाव मसूड़ा
मज्जेद घोर फूना दूषा तथा उससे सड़ गिरना मुखमें
दुग्ध पारकी विवर्ति रहनी ।

काव्य मेसि १२ । सड़ा घाव चक्का दोष
घारे की विवर्ति । पार्सेनिकसे फायदा न होनेसे इससे
पत्र पाया जाता है ।

पार्मेनिक १७ । मुखमें दुग्ध होना उन्ना
मय चस्यता दुस्मनता । जोमके चिनारके घाव , घावमें
बहुत बलन होगी ।

मन्फर ३० । यदि किसी दवासे फायदा
होकर घोर कष न हो या देहमें सुत्रनी पसड़ाका दोष
रहे तो बीसमें दसवी एक मासा देनेसे विमेष फायदा
दीयता है ।

सीराक्स ६ । बालक घोर बटोकी पैडा मुख

वातजनित गिरपोड़ा । सुबेरसे गुरू होकर दिन चढ़ने के महु हो सहु उभुआ बढ़ना, रातमें भी दण् दण् करके दरद, सामयिक दरद ।

मुखमें घाव । (Aphthæ)

मुखमें भोतरमें जोभरमें दातमें पाय्भरमें सादे सादे घाव बुधा करत हैं । सामान्य प्रकारको पोड़ा पच्य व्यञ्जनमें ठण्डा लगन और पट गरम होनेसे इसकी उत्पत्ति हुआ करती है ।

ग्रेगव चकण्याम एव ज्ञातं जाता है । इसके बीच पीताभ बरन घाव बनत हैं । और एक तरह का मख है उसमें उक्त घाव ग्राह्य बरन होनेमें (प्यापिचाम) जा जाता है । इसमें नियाममें दुग्ध और गाम कूत जाते हैं ।

मण्डकार्ग चिकित्सा । दूध शीशोंको जानम सुहागाको आर और म्बिनिरिन वा मधु एकत्र करके लगाता जाता है । लेकिन जानक वा शिशुर्पाई पचमें यह चन्दा नही है । उनमें घावमें मीठो का दूध देना चन्दा है ।

दवा ।

नक्षत्रभूमिका ६ । मछड़े का फूँलना छरद
मुचमें लम्ब निहलना कोठरद भास्साव ।

मार्कुशियाम ६ । मुचमें बार गिरना पिटकी
ब मारी दुग्धदुग्ध धावमें पच्छा दाग दिहना जिह्वा
ज्योत दोर हज्जादम वगर कचरमें दिटा जाता है ।

एमिड नाइट्रिड ६ । मुचमें धाव मएडा
मवेद दोर फूना दूधा मया उमड़े मङ्ग दिरना मुचमें
दुग्ध दागें दिहति रहनी ।

काय्य भक्ति १२ । बडा धाव पछाका दोर
धारे की विहति । कावेनिजसे धावदा न होनेसे हलम
पह पाटा जाता है ।

यामेनिज १२ । मचमें दुग्ध जग एन्ना
मद दमज दुग्धमग । कावे निजारेसे धाव धावमें
रहुन जग्न होई ।

मसूर ३० । ददि बिही दवाने पच्छा
दोहर दोर धम न हावा देहन एन्ने पछाका दोर
रह मो दैरने रहको एक माता देहेसे विहय पच्छा
देहना है ।

बीराकुम ६ । एन्ना दोर एन्ने दोहा मुच

वातजनित गिरपोड़ा । सुबेरेमें मूह होकर दिन घटने के मूह हो मूह उसका बढ़ना रातमें भी दप दप करके दरद, सामयिक दरद ।

मुखमें घाव । (Aphthæ)

मुखक भीतरमें जोमर्म दांतके पाखमें सादे मांस घाव हुआ करता है । सामान्य प्रकारको पोड़ा चमक घबड़ाहारेमें ठण्ठा लगाने और पेट गरम होनेसे इसको न्यस्तित किया जाता है ।

जैसा चकामासे यह ज्ञाते होता है । इसमें बीच पीताम वक्त्र घाव काज्ज है । और एक तरह का मज्ज है उससे उक्त घाव मोत्र वक्त्र होनेमें (व्यापितमान) जा जाता है । इसमें निशाममें दुग्ध और गाम फूस जाते हैं ।

सहजारी चिकित्सा । युवा लोगोंको जोमर्म घुहागाको रक्त और निमिर्नि वा मधु एकर करके लगाया जाता है । अजिब वाक्त्र वा गिरपोड़ा पचने यह पन्था नहीं । जन्म घावमें मीठी का दूध लगा जाता है ।

दवा ।

नक्षत्रभूमिका ६ । मण्डे का घुसना दाद मुण्डे गन्ध निवृत्तना कोठरु मारसाव ।

मार्फुरियास ६ । मुण्डे मार गिरना पटकी बामरो दुग्धदुग्ध घावने पट्टा दात दिनना जिह्वा लोत पीर कडापन वगर मधपने दिया जाता है ।

एनिह नाइट्रिक ६ । मुण्डे घाव मण्डा मज्जे पीर घना हुआ मण्डा उससे नक्षत्र गिरना मुण्डे दुग्ध घावने विवृति रहनी ।

काव्य मेजि १२ । मडा घाव पट्टा दोष घावने विवृति । घावनेमिसे घावदा न होनेसे रहने कस पाया जाता है ।

घावनेमि १२ । मुण्डे दुग्ध होना उदरा मध पत्यन्त दुग्धमता । लोभने जिह्वारके घाव घावने रहने नवन ह नी ।

मल्फूर ३० । यदि किसी दशासे घावदा होकर पीर कम न हो वा देहमें सुधनी घण्टाका दोष रहे तो बीचमें दफ्ती एक मावा देनेसे विशेष घावदा दीपना है ।

वीराक्स ६ । दातक पीर हटोके पैडा मुण्ड

हैं चनें उ तरहड़ी तजमे उ भोगे है जे किन
मच्छ करमे उ उ तरह नही रहन । हदरमदमे
ना ठठता है बांध करक बिजाना यथाय वरिह
मच्छ प्रसाय होत है । मच्छमुख बन्द रहना
ते चनें उ तरहसे मछी खरना है चनें उ होतमे
हान रहना है ।

राग निषेध । दुख बाहुमे मृगो रोगसे माध
कायकता है । मृगो रागका जिस तरह बठात
कमल मच्छ वनम मय का म छाटना मच्छ देखे
ते है हमसे वह नही दखते ।

भाषिकल । हाथ रोग चाराम दवा खरना
। छियां हो पत मच्छ वनम वा मच्छाव होतमे
न का मच्छाव नो है ।

दानुपट्टिक चिकित्सा । रोगका मच्छाव
मच्छाव खरना मच्छाव उतमता न हान दना
मच्छाव मच्छाव मच्छाव रत वनम उतमता मच्छाव
मच्छाव दना मच्छाव । मच्छाव मच्छाव मच्छाव
मच्छाव है । मच्छाव मच्छाव मच्छाव मच्छाव
मच्छाव मच्छाव है ।

रोगका जिस तरह चिकित्सा पर मृग निषेध
न चिकित्सा मच्छाव मच्छाव मच्छाव मच्छाव

सकते हैं। अनेक तरहकी तकलीफें होकर हैं। अनेक
अन्यमगल करनेसे उस तरह नहीं रहते। अनेक
एक गांवा उठता है बाध करके रहता है। अनेक
वैद्य सचय प्रमाण होते हैं। अनेक
नैबकी अनेक तरहसे मही खरग है। अनेक
भी ज्ञान रहता है ।

रोग निषेध । गुल्म वगैरे रोगों से रोग
भूत होसकती है। अनेक रोगों से रोग
आक्रमण सम्पूर्ण अतः सोचने में रहना चाहता है।
आते हैं इसमें वह नहीं टोका ।

आधिपत्य । यह रोग आक्रमण
है। अनेक रोगों से रोगों से रोगों से
रोग को समता जाती है ।

आनुपादिक विधिः । अनेक
विधान करना आनुपादिक विधिः । अनेक
समदा यह विधान है। अनेक
पटने देना चाहिये । अनेक
करना है । अनेक
करना चाहता है ।

॥

रोगिनोऽपि विधिः । अनेक
है, विधिः है । अनेक

गनी

ठन कर उड़तो है और उस निचे घट निगनने और
थाम सेनेमे होय जाताके मोष धडकना बाध ।

क्यालक्षेरिया कार्ब ३ ग । येका प्रधान
धातु स्तब्धताय एष रोग दोहा शीत श्रमनेमे महीं
होना धातु अधिक रक्तसाव पदर रोग मनाविषाद
दिनके मोष एनेह बार रोगक्रमय अनिद्रा वगैर
मसहमें दना होता है ।

नक्ष्मभमिका ३. ग । येय रातमें अनिद्रा
घोरे निना जाठरहता अथवा मानमिह विवृति ।

स्फूर्णन ३ । बहते बहते मीह वा मूच्या
भाव मोष हो मानो हमका मरच होगा । अनुटहार
इन् मसह ।

नक्ष्ममस्केटा ६ । ठहा वा उपहाम करना
उमह बादही गभीर होना दांत निकाल कर हमना
उदराधान रक्तसाव परिवर्तमें पदरसाव । निद्रामाष
न्याटे ।

प्राटिना ३. । पाय-गरिमा यहसे मनब्याग
काले रक्तका प्रपुर रक्तसाव । रुह दवा अधिक इन्द्रिय
परिधामने धनजनित रोगमें व्यवहाय है ।

स्फूर्ण ३० । दाहमपह बाद रोगिनी

मुत्रविग धारणमें असाध्य और शय्यामें मुत्रत्याग ।

(Enuresis and Wetting the bed)

पेटमें कृमि रहना मूत्रपथके अनेक भागके मज्जा
पथके धारणमें असाध्य होना है । बच्चेको यह
रोग बड़ा हो कह देता है ।

चिकित्सादि और महकारी उपाय—

बच्चेको रातमें सुलानेके पढ़ने पढ़ाव करके सुनाया
उचित है ।

रातके बड़े पुरुषोंके भोजन करने देना उचित नहीं
है और रातमें फिर एक दफे जगा कर पढ़ाव कराना
सही है । रोग भीतल तकसे नइमानेसे सुनि-
याती है ।

हवा ।

हाल्लर झारने दिया है — एमर १०. कम
दिन के होकर ३१ मास होने करनेको देनेमें
निपट हो राग दूर हो जाता है ।

इसके अन्तर में होनेसे और कुछ बच्चे एमरको
शक्तिरूपसे देने सिपिया ३० वा ब्रिंलाइना
वा पल्स इदिता है ।

पञ्चम सुखो शीर मव चोज उमकं याम सुन्दर कर
 भार होना । पञ्चर पगाव हाथ पैरको जमन मापक
 चान्ते गरम ।

सन्निप्त चिकित्सा ।

हिट्टिरिया सहित मायेका टरट,—
 इन्जेनिया प्राटोना मियिया ।

गमेक बोध चान्दप,—माइकाप एसा
 पिट्टिहा ।

पाकागयिक विकृति मद्यप,—इन्जेनिया
 ककुनाम मद्यप ।

कटु शीर लगायुत्र विकृति,—कटु रस
 वि दमम ।

कालाशे बोध चान्दप,—इन्जे मद्यप माक
 मय ।

पञ्चम भय,—प्राटोना दमम ।

उत्कृष्टा,—मय दमम ।

त्रिपट,—परम, दमम ।

पतिनियत पेट,—मद्यप ।

पनिट्टा,—इन्जेनिया मद्यप ।

मूत्रवेग धारणमें असामर्थ्य और ग्रथ्यामे मूत्रत्याग ।

(Enuresis and Wetting the bed)

पेटमें जलमि रहना मूत्रयन्त्रक घनेरु तरङ्गके मज्जा
घोर धारणमें एसा राग होता है । लडकोंको यह
राग बड़ा ही कष्ट देता है ।

चिकित्सादि और सहकारी उपाय—

लडकेको रातमें सुतानेके पहिले पेयाव कराके सुनाना
उचित है ।

रातके बाल गुह्याक भोजन करने रेना उचित नहीं
है और रातमें फिर एक दफे जगा कर पेयाव कराना
पच्छा है । रोज़ गीतल जलसे नहलानेसे सुनिद्रा
होती है ।

दवा ।

डाक्टर ज्वारने लिखा है —बालकर ३० क्रम
८ दिन के बीच २।३ मात्रा सेवन करनेको देनेसे
निश्चय ही रोग दूर हो जाता है ।

इससे फायदा न होनेसे और कुछ ज्यादा उमरवाली
बालिकाओंके पक्षमें सिपिया ३० वा वेलाडना
वा पल्स बढ़ियां हैं ।

अत्यन्त मुखो धार मव चात्र उमकं पाव मरुत इहई
बोध होना । प्रचर पगाव, हाथ परकी चलन मापका
चादो गरम ।

मक्षिप्त चिकित्सा ।

हिटिरिया महित मायेका दरद,—
इमेमिया प्राटोना मिपिया ।

गलेक बोध चाछेप,—साइकोप ' एमा
फिटिडा ।

पाकाशयिक विकृति लक्षण,—इमेमिया
ककुमास नक्षम ।

षटु ओर लरायुज विकृति,—ककु इम
मि पलम ।

हातोके बोध चाछेप,—इमे नक्षम माक
सम ।

अत्यन्त भय,—प्राटोना पलम ।

उत्कण्ठा,—नक्ष, पलम ।

विषद,—धरम, पलम ।

प्रतिनियत खेद,—नक्षम ।

अनिद्रा,—इमेमिया, नक्षम ।

सुखेन धारयमे पन्नामर्घ्यं श्री

अध्याने सुवत्साग ।

(Enuresis and Wetting the bed)

पटमें हमि रहना मूखपखंड धर्मक तरफक मग
 धर्मे खारखी पना राम जाना है । लडकोका यह
 रीत बडा ही पट दना है ।

विहिलमादि घोर भइकारी उदाय—

मन्त्रोच्चारण द्वारा ही सुखानन्द के अद्विष्टे योगीश्वर का स्वर्ग प्राप्त
 संभव है ।

राजसे वर मुहपाख भोजन करने देना कठिन नहीं है। दोर राजमें फिर एक दसो जग कर दया कराना पड़ा है। दोर राजमें बहुत नृपमानेह बुद्धिवादी हैं।



हजार आरंभ किया है — दस लाख १० लाख
 ५ लाख ५ लाख १५ लाख १५ लाख १५ लाख
 १५ लाख १५ लाख १५ लाख १५ लाख १५ लाख

एक ही सङ्ख्या में दोनो ही रीर कुछ बदले जमावाने के लक्ष्य के लिये एकरे सिद्धिदा ३० या प्रस्तावना या दण्डन कहिये है ।

पगला सुधो पोर सब भाजं उपहे पाव मन्त्रा अरु
 यो । होमा । एकर पैगाव जाय परको जलन मादर
 जाटो मरम ।

सन्निभ चिकित्सा ।

हिटिरिया महित मायेका टाट, -
 दल मिवा डाटोना मिपिया ।

गलेक थोच पाछेप, — मादकाप एका
 किटिका ।

पाकागयिक विकृति लक्षण, — दम्भि
 ककुमास नखभ ।

अतु पोर खरायुज विकृति, — ककु दल
 मि पलम ।

छातोके थोच पाछेप, — दम्भे नखभ माक
 सन ।

पत्यन्त भय, — डाटोना पलम ।

उत्कण्ठा, — नख, पलम ।

विपद, — परम्, पलम ।

प्रतिनियत खेट, — नखभ ।

पनिद्रा, — दम्भेसिया, नखभ ।

मूत्रवेग धारणमें अक्षमार्थ्य और अध्यामि मूत्रत्याग ।

(Enuresis and Wetting the bed)

पेटमें अग्नि रहना मूत्रव्यसर्जक करनेवाला तराईक मज्जा
रहित धारणमें असमर्थ होता है । मज्जाहीन यह
रोग बड़ा ही कष्ट देता है ।

चिकित्सादि और सहायकारी उपाय—

मज्जाहीन रातमें सुसानेसे पूर्वसे पेयाज कराके सुमाना
उचित है ।

रातमें बहुत कुछपाक भोजन करने देना उचित नहीं
है और रातमें फिर एक दूधे जमा कर पेयाज कराना
अच्छा है । रोज़ दूधसहित बहुतसे मज्जाहीन सुनिद्रा
होगा है ।

दवा ।

हालार उद्धारमें विधा है,—कल्पर १० ग्राम
८ दिन के बीच २१२ मात्रा सेवन करनेको देनेसे
निश्चय ही रोग दूर हो जाता है ।

रक्त पीतल न होनेसे और कुछ ज्यादा समरधानी
वांछित होनेसे पक्षि सिपिया ३० वा बैलाडना
वा पल्स बटिनी है ।

लाटुकोपडियम ३० । देमावडे तरे देट
के घुराई तरह परराऊमें बारवार देमाव देमाव
पाडे मो न होय ।

माकुटियास ६ । पतनी धारसे चयश बूद
बूद देमाव । देमावमें लह पोव रहना देमाव धारणमें
चमामपाता ।

लिमेंटिस् ६ । भूवद्व दम् पतनी धारसे
देमाव भूवमें देमावत् पदाय रहना । बहुत देर तक
वेग देमेंने छराकी देमाव होनी ।

गूल पीडा । (Colic)

कारण । चर्बेण बनेशकी बीजे पागा चम्बमें
बहु बला ठपका मग्ना लमि पादरी निबन्ना पौर
पाइमर्गमें पस बला बनेट कारणसे मो दरद होता
ह उमे गूल कहते ह । गूल दम्बसे दरद कमभा जाता
है । मध्याह्नमें कम मोद गूलदीना लडा करते हैं ।

लक्षण । पन्नादिके होव सुरे, बकोट हाटन
की तरह तदा गूल देखवत् दान देट फून्ना सोड
रड वा चन्किर बमन होर मल्ल विद्यमान रहता
ह । कम दरद कम रहता है कमो औरस पापमण

करता है । हाथ में दधाने वा वायु निज्जलनेमें उपयोग
बोध हो । कभी दधानमें लरद बढ़ता है ।

पानुपट्टिक चिक्ताया । गरम जनको पित्त
कारी वा कानेन वक्षसे सेज नेनेमें उपयोग बोध होता
है । कभी मोक्ष वा जन वा नमक जन मीशनमें पचता
जाता है । कभी मोक्ष खानमें खनिज चाराम मिलता है ।
यथावर्त कामियोवेविक दवा मीशन करके इसे बन
करना उचित है ।

दवा ।

कुकोनाष्ट ३ । पलाहदृष्ट लरद ठण्डा जमई
पांदा ज्वर महन चत्थिरता व्याध पैटमें क्वा/व्या
विद्व कसरमें क्वाद दाद ।

दीनाडना ६ । कुकोनाष्टको लरद भक्ष्य पैट
में पांदा व्याध लक्षण न हो भक्तिन जारमें स्वाम पर
चाराम बोध । क्वात् लरद जाना क्वात् कूट जाना ।

कामोमिना १२ । कोलक लरद पैट कून
जाना, ज्वर ६ पांदा क्वात् लरद, विमर्श चोर बसम ।

कुकोमिना ६ । कोलक पैटमें माना क्वा
में क्वात् है इस लरदको लक्षण, पला मारी
लक्षण करद है क्वात् क्वात् कुकोमिना क्वात् लरद या पैट

मक्रिया वा खड़ी वस्तुसे तेनकर धरनेसे उपग्रह । पत्त
पत्त पतली दस्त होना ।

हायोम्कोरिया ६ । पाधानदुक्त गून कनी
हिन्दुका विपरोत लक्ष्य पर्यात् पेटमें दधानेसे तक्रभोष
बटमे ।

नक्षत्रभमिका ६ । पचापचनित पेटम दरद
मुखसे लन चठना समन कोठबदता ।

पल्सिटिना ६ । ठण्डानित वा चर्मीयुक्त
पाय वस्तुपक्षि पैनाही कर्पित । दिनके जेयमें हृदि ।

सलफर ७० । पान पानके बाद पेटमें दरद
पात में हृमि रहना कोठबदता पेटमें नार ।

सचिप्त विहिता ।

अपाकजनित दरद,—नक्षत्रभमिका पयस ।

पाथगेजनित दरद,—पायना ।

हृमिजनित दरद,—मिना वा माकु ।

वायुसंचारजनित दरद,—साहबोप लाव
मेत्रि ।

सौसगून,—इयम पल्लव ।

तकिया वा कड़ो बन्नुस ठेनकर धरनेमे उपग्रम । चरित्र
चरित्र पतनी दस्त होना ।

हायोम्कोरिया ६ । पाधानपुत्र गृह कनो

मिथ्या विपरीत सचच चयात् पेटमे दबानेन तक्रनीक
बटनी ।

नक्षत्रभमिका ६ । पञ्जी-जनित पेटमे दरद

मुचर्ष कन उठना बमन चोठदहता ।

पन्मेटिला ६ । ठण्डाजनित वा चर्यापुत्र

पाद वस्तुपाद चोडाको उम्वनि । निम्न ग्रयमं वृद्धि ।

सन्तुफर ३० । पात पातक बाट पेटमे दरद

पात मे हर्मि रहना कोरदहता पेटमे नार ।

सचित्र चिकित्सा ।

अपाकजनित दरद,—नक्षत्रभमिका पमन ।

पापरीजनित दरद,—बाधना ।

हर्मिजनित दरद,—दिना वा माक ।

बाहुमधुरजनित दरद,—नारकोप, पात
मेरु ।

भीमगुल,—इयम पनच ।

